ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त-२०२६

अगस्त-२०२६ ◆ वर्ष १६ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

माँ पर वारा जन्म यह, किया जीवन का बलिदान,
अठारह वर्ष की आयु में, अमर 'खुदी' का नाम।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५

१७८

भारत के सरताज
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH मसाले
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
MDH KITCHEN KING
किचन किंग
MDH CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
MDH DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
MDH CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमाँसक
डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1500
आजीवन	- 2500 रु.	$ 400
पंचवर्षीय	- 1200 रु.	$ 250
वार्षिक	- 300 रु.	$ 60
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
श्रावण कृष्ण नवमी
विक्रम संवत्
२०८३
दयानन्दाब्द
२०२

August - 2026

०४	वेद सुधा
०७	सबसे बड़ी पूजा है संसार की सेवा
१४	आर्य समाज का स्वर्णिम अतीत
१७	सत्यार्थ मित्र बनें
१८	स्वतंत्रता दिवस पर विशेष
१९	अन्तर्मन की बात सुनो
२३	जीवन अमृत
२६	स्वास्थ्य- हिक्का (हिचकी) कारण और निवारण
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

समाचार २१
हलचल ३०

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	4000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सत्यार्थ सौरभ पत्रिका में AI GENERATED IMAGES का प्रयोग किया गया है।

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष -१५ अंक -०४

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

वेद का आर्थिक दृष्टिकोण

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर।। - ऋग्वेद १/८/१

ऋषिः– मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः।। **देवता**– इन्द्रः।। **छन्दः**– निचृद्गायत्री।।

अन्वयः– **हे इन्द्र ऊतये सानसिम्, सजित्वानम् सदासहम् वर्षिष्ठम् रयिम् आभर।**

शब्दार्थ– (हे इन्द्र) ऐश्वर्यों के भण्डार प्रभो! (ऊतये) रक्षा, गति आदि के लिए (सानसिम्) बाँटकर उपभोग में आनेवाले (सजित्वानम्) विजेता बनानेवाले (सदासहम्) सदा स्वावलम्बी और सहिष्णु बनानेवाले (वर्षिष्ठम्) बहुत वर्षों तक टिकने वाले, बढ़ने वाले (रयिम्) ऐश्वर्य को (आभर) हमें सब ओर से दीजिये।

व्याख्या – इस मन्त्र में प्रभु से ऐश्वर्य की, धनधान्य की प्रार्थना की गई है, किन्तु उस धन के लिए चार महत्त्वपूर्ण शर्तें लगाई गई हैं–

(१) धन को बाँटकर खावें।

(२) धन को प्राप्त करके विजेता बने रहें।

(३) धन प्राप्त करके सहनशील और स्वावलम्बी बने रहें।

(४) वर्षिष्ठम्, वह धन खूब बढ़े और बहुत वर्षों तक टिकनेवाला हो।

अब क्रमशः विचार कीजिये। भक्त भिक्षा की झोली फैलाकर कहता है– हे इन्द्र! ऐश्वर्यों के भण्डार प्रभो! मैं आपसे याचना करता हूँ, मेरी इस झोली को **'रयिम् आभर'**– ऐश्वर्य से भरपूर कर दो। तुमसे माँगने के बाद इसका कोई कोना रिक्त न रह जावे और मुझे अपने जैसे किसी व्यक्ति के सामने हाथ न फैलाना पड़े। मैं **'अदीन'** होकर रहूँ। मुझे आपसे माँगने में तो संकोच नहीं है, क्योंकि आपसे माँगना मेरा अधिकार है। पुत्र पिता से न माँगेगा तो किससे माँगेगा? फिर आपसे तो प्रत्येक माँगता है, इसलिए भी मुझे संकोच नहीं है, किन्तु अपने जैसे व्यक्तियों से माँगना तो मरने के बराबर है। संस्कृत के कवियों ने याचक के कुछ शब्दचित्र खींचे हैं–

तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः।
वायुना नीयते नासौ स्वयं याचनशंकया।।

'तिनका बहुत हल्का होता है, तिनके से भी हल्की रुई होती है और रुई से भी हल्का याचक होता है। याचक हवा में तो इसलिए नहीं उड़ता कि हवा भी उसके माँगने के डर से उससे बचकर निकल जाती है।' एक दूसरी उत्प्रेक्षा देखिए–

गुरुतामुपयाति यन्मृतस्तत्त्वं विदितं मयाधुना।
ननु लाघवहेतुरर्थिता न मृते तिष्ठति सा मनागपि।।

'जीवित व्यक्ति के शरीर की अपेक्षा शव अधिक भारी होता है। इस विचित्र बात का रहस्य अब मैंने जाना कि संसार में हल्का करनेवाली चीज **'अर्थिता'**– गरज होती है और मुर्दे को किसी से कोई गरज नहीं होती इसलिए वह भारी हो जाता है।' अस्तु, सार यह है कि याचिष्णुता और दीनता की बहुत निन्दा की गई है, किन्तु अपने जैसे मनुष्य से। उस प्रभु के समक्ष तो सम्राट् भी हाथ पसारे खड़ा है। तृप्ति भी मनुष्य को तभी होती है, जब ईश्वर कृपा करता है। दुनियावी दाता कब किसको निहाल करते हैं! उर्दू के शायर **'मीर'** ने बड़े पते की बात कही है–

'मीर' बन्दों से काम कब निकला।
माँगना गर हो कुछ, खुदा से माँग।।

इसलिए भक्त नम्रतापूर्वक साधिकार विनय करता है कि मैं आपसे माँगता हूँ और इतना मिलना चाहिए कि मेरी सब आवश्यकताएँ स्वाभिमान से पूरी हो जावें। **'भर'** के साथ **'आंग'** उपसर्ग का यही भाव है। नहीं तो **'भर'** ही पर्याप्त था। **'आंग'** लगाने से अर्थ हुआ **'समन्तात्'**- सब ओर से पूर्ति हो।

अब आगे प्रश्न हुआ कि तुम ऐश्वर्य की इच्छा क्यों करते हो? इसके लिए मन्त्र में कहा- **'ऊतये'**। यह शब्द **'अव'** धातु से, जिसके संस्कृत व्याकरण में सबसे अधिक अर्थ हैं, निष्पन्न हुआ है। इसी धातु से ओम् शब्द भी बना है। व्याकरण से अनभिज्ञ लोगों की जानकारी के लिए अव्-धातु के अर्थ ये हैं- अव् रक्षण, गति, कान्ति, प्रीति, तृप्ति, अवगम, प्रवेश, श्रवण, स्वाम्यर्थ, याचन, क्रिया, इच्छा, दीप्ति, अवाप्ति, हिंसा, आलिंगन, दान, भाग और वृद्धि, ये १६ अर्थ हैं। अकेला अव् शब्द और उन्नीस अर्थ! ऐसा समझिये जैसे एक डंठल पर १६ फल लगे हों। इतने अधिक अर्थ होने के कारण ही यह शब्द प्रभु का वाचक बना। प्रभु के तो अनन्त गुण हैं, पर शब्दशास्त्र के आधार पर एक शब्द से सम्बद्ध इतने गुणों का पात्र वह प्रभु ही हो सकता है।

इसका एक अभिप्राय बिना खींचातानी के यह भी निकला कि संसार में संसार के ढंग से जीने के लिए ऐश्वर्य अनिवार्य है। कौन-सा ऐसा काम है, जिसके लिए पैसे की आवश्यकता न हो? रक्षा के लिए, गति के लिए, कान्ति के लिए, प्रीति के लिए, अर्थात् सभी के लिए धन चाहिए।

अतः जीवन में 'धर्म' के बाद 'अर्थ' का दूसरा नम्बर है। दूसरे शब्दों में भगवान् के बाद धन का दूसरा स्थान है। इसलिए मैं आपसे उसी की प्रार्थना करता हूँ।

प्रार्थी को उस धन का उपभोग किस प्रकार करना चाहिए? उसकी पहली शर्त है- **'सानसिम्'**- उसे परिवार में और समाज में बाँटके खाओ। धन आपने अपने पुरुषार्थ से, सूझबूझ से कमाया है, तब भी अकेले उसके

उपभोग की बात मत सोचिये। यदि ऐसा किया तो उससे सुख और शान्ति नहीं मिलेगी, क्योंकि हमारे प्रत्येक काम में दूसरे अनेक व्यक्तियों का सहयोग होता है, अतः उन सबकी अनदेखी करके गुलछर्रे उड़ाने की बात सोचना न तर्कसंगत है और न धर्मसंगत ही।

एक व्यक्ति यदि यह दावा करे कि मैं किसी का भी सहयोग लिये बिना अपना कारोबार चलाऊँगा, तो हमें उसे छूट दे देनी चाहिये कि वह चाहे करोड़ों की सम्पत्ति एकत्र कर ले, हम उसमें से कुछ भी भाग लेने का अनुरोध नहीं करेंगे; किन्तु व्यवहार की कसौटी पर यह असम्भव है कि मनुष्य दूसरों के बिना कुछ करने में समर्थ हो जावे।

किसी बड़े कारोबार की तो बात ही क्या है, अकेला मनुष्य तो अपनी आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर सकता। थोड़ा-सा स्थिति का विश्लेषण कीजिये। मनुष्य की मोटी तीन अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं-

(१) उसे भूख - निवृत्ति के लिए रोटी चाहिए।
(२) तन ढकने के लिए वस्त्र चाहिए।
(३) काँटे और कंकड़ पत्थरों से बचाव के लिए जूते-चप्पल अथवा खड़ाऊँ चाहिए।

अब विचारिये कि यदि मनुष्य समाज का सहारा न ले तो इन वस्तुओं के लिए उसे कितना परिश्रम करना पड़ेगा और कितनी लम्बी प्रक्रिया में से गुज़रना होगा?

पहली आवश्यकता-पूर्ति के लिए हल-बैल आदि साधन जुटाकर भूमि तैयार करनी होगी। गेहूँ, जौ, चावल और दलहन तथा सब्जी के बीज बोने होंगे। उगने पर उनकी रक्षा, सिंचाई, गुड़ाई आदि करनी होगी। फसल तैयार होने पर काटनी होगी। काटकर खलिहान में लानी होगी। फिर बैलों के सहारे से अन्न निकलेगा, इसके बाद उसे साफ करके आटा बनाना होगा। इसके बाद आटे से भी भोजन बनाने के लिए कितने लम्बे प्रोसीजर (प्रक्रिया) में से गुजरेगा, तब जाकर कहीं पेट की समस्या का समाधान होगा। इसी प्रकार वस्त्र के लिए भी सोचिये। चाहे वह कपास से बने, चाहे रेशम या ऊन से कितना लम्बा और जटिल काम है! तब तन ढका गया। यही स्थिति जूते और चप्पल उपलब्ध करने की होगी। यदि मनुष्य किसी का सहारा न ले और स्वयं ही इन सब वस्तुओं को जुटाए तो रात-दिन इस गोरख धन्धे में व्यस्त रहना पड़ेगा और उसकी मनःस्थिति यह होगी कि वह जीवन से ऊब जाएगा तथा इस जीवन से मरना पसन्द करेगा।

अतः संसार के समस्त छोटे-बड़े काम समाज के परस्पर के सहयोग से चल रहे हैं। कोई अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार खेती-बाड़ी में संलग्न है, कोई वस्त्र तैयार करता है, कोई भवन निर्माण कर रहा है, कोई

जूते-चप्पल के उद्योग में है, कोई अध्ययनाध्यापन में। सार यह है कि सब काम सबके सहयोग से और पारस्परिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए चल रहे हैं। समाज में सबकी बौद्धिक और शारीरिक क्षमता भी समान नहीं होती। इस विविधता को वेद ने बड़े सुन्दर ढंग से कहा है-

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं प्रणीतः॥ - ऋग्वेद १०/११७/६

'दोनों हाथ आकार-प्रकार में और देखने-भालने में एक जैसे लगते हैं, किन्तु दोनों में शक्ति बराबर नहीं है। एक गौ की दो बछड़ियाँ हैं, किन्तु दूध दोनों का बराबर नहीं होता। एक माता के दो जुड़वाँ बच्चे हैं, जो सर्वथा एक जैसी स्थिति में रहकर पैदा हुए हैं, किन्तु दोनों की बौद्धिक तथा शारीरिक शक्ति एक जैसी नहीं होती। यही अवस्था एक बिरादरी के दो व्यक्तियों की होती है।' इस विषम स्थिति की पूर्ति का एक ही उपाय है कि समाज के सब लोग एक-दूसरे की आवश्यकता का ध्यान रखकर बाँटकर खावें। यह संसार सुख और सौमनस्य से तभी चल सकता है, जब हम अपनी उपार्जित सम्पदा को दूसरों को अर्पित करते हुए उपभोग करें। वैदिक भाषा में इसी का नाम यज्ञ है। **क्रमशः ....**

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- पण्डित शिवकुमार शास्त्री
साभार- श्रुति-सौरभ

सबसे बड़ी पूजा है संसार की सेवा

संसार का हर आदमी चाहे वो किसी भी देश अथवा मजहब से ताल्लुक रखता हो, किसी-न-किसी रूप में पूजा आदि जरूर करता है। खासतौर पर हमारा हिन्दुस्तान तो इस मामले में सबसे बढ़कर है। शायद ही कोई ऐसा दिन होगा, जिसकी महिमा का बखान हमारे धर्मग्रन्थों में न किया गया हो और उस दिन किसी विशेष पूजा आदि की बात न कही गयी हो। धर्म को लेकर, पूजा, उपासना, भजन-कीर्तन-सत्संग को लेकर हमारी भरपूर दिलचस्पी बेशक तारीफ के काबिल है, मगर इन सबके बीच जो सबसे बड़ी पूजा है, उसे अकसर हम भूल जाते हैं या फिर इस मामले में जान-बूझकर अनजान बने रहते हैं।

अब आप जरूर जानना चाहेंगे कि यह सबसे बड़ी पूजा क्या है? यह सबसे बड़ी पूजा है संसार की सेवा। **भले ही हम पूजा के नाम पर और कुछ भी न करें, मगर संसार की सेवा के लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ न्योछावर कर दें, तो यही सबसे बड़ा यज्ञ होगा।** हमारे जितने भी महापुरुष हुए, उन्हें महापुरुष बनाने में सेवा रूपी यह यज्ञ ही सबसे बड़ा मददगार बना। इतना ही नहीं, आज की तारीख में भी संसार में जिनकी कीर्ति पताका लहरा रही है, वह सेवा की बदौलत ही लहरा रही है। इसलिए हम सबका यह फर्ज बनता है कि संसार की सेवा में हमेशा जुटे रहें, हर मुरझाए हुए चेहरे पर मुस्कान बिखेर देना ही अपनी जिन्दगी का मकसद बना लें।

मैंने जब से होश सम्भाला तब से लेकर आज तक सच कहूँ तो मैं सेवा को ही सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ी पूजा मानते हुए इसमें जुटा रहा। बचपन में जहाँ माता-पिता और परिवार के साथ सेवा रूपी यह पूजा जारी रही, वहीं बाद में धीरे-धीरे समाज का एक बड़ा हिस्सा भी साथ आता गया-लोग मिलते गए, कारवां बनता गया। इस तरह सेवा के लिए तन-मन-धन सब कुछ न्योछावर होता रहा और प्रभुजी की कृपा से हर वो खुशी गले लगाती गयी, जिसके लिए लोभ, स्वार्थ, नफरत और बेईमानी के दलदल में फंसा हुआ आदमी ताउम्र तड़पता रहता है।

कुल मिलाकर **हकीकत यही है कि संसार की सेवा ही इस संसार को बनाने वाले की असली सेवा है।** हमारे धर्मग्रन्थ भी यही कहते हैं- भगवान सिर्फ भाव के ही भूखे होते हैं। जिसने सेवा भाव रूपी अनमोल फूलों से भगवान की पूजा कर दी, संसार की सेवा में जुट गया, उसे भगवान को ढूँढ़ने के लिए मन्दिरों में, तीर्थों में भटकने की जरूरत नहीं रह जाती, बल्कि भगवान चौबीसों घण्टे उसके साथ बने रहते हैं। इसलिए सबसे मेरी यही गुजारिश होगी कि आपके पास जो कुछ भी है, वह आपका नहीं, संसार का है और उसे हँसते-मुस्कराते हुए संसार की सेवा में लगा दें।

शुभाकांक्षी
(राजीव गुलाटी)

हम सबका यह फर्ज बनता है कि संसार की सेवा में हमेशा जुटे रहें, हर मुरझाए हुए चेहरे पर मुस्कान बिखेर देना ही अपनी जिन्दगी का मकसद बना लें।

"अंधों को आँखें"- निकला हवा हवाई दावा वैज्ञानिक परीक्षण में खुली पोल

यहाँ भी यही निकला -Vladimir केवल Blindfold के किनारे से झाँक रहा था।

इस लेख माला के वर्तमान क्रम को हम वहीं से प्रारम्भ करना चाहेंगे जहाँ पर पिछले अंक का समापन किया था क्योंकि हम दिल से चाहते हैं कि यदि "तीसरी आँख जागरण" में लेशमात्र भी सत्यता है तो इसका लाभ उन अन्धे लोगों को मिलना चाहिए जो बिना पट्टी बाँधे ही इस सृष्टि के सौन्दर्य को देखने से वंचित हैं।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना उचित होगा कि ये दृष्टिहीन जन यद्यपि आँख से देखने से वंचित है परन्तु इनकी अन्य इन्द्रियों की ताकत इनमें सहज भाव से बढ़ती पाई गई है जिनको इन्होंने अपने पुरुषार्थ और अभ्यास से कई गुना बढ़ा भी लिया है, यही कारण है कि ये दृष्टिहीन लोग भी अन्य अनेक कार्य इस प्रकार से करते हैं कि दाँतो तले उँगली दबानी पड़ती है। अब क्रिकेट को ही लीजिए। अन्धों के मध्य अभी हाल में वर्ल्ड कप खेला गया था जिसमें भारत की टीम ने पाकिस्तान को हराकर विजय प्राप्त की थी। दृष्टिहीनों के सन्दर्भ में क्रिकेट की बात कौन सोच सकता है। परन्तु ध्यातव्य यह है कि किसी ने इनकी तीसरी आँख को Activate नहीं किया था। खेल की संरचना ही इस प्रकार की है कि जो बाल फैंकी जाती है उसके अन्दर छर्रेनुमा गोलियाँ मौजूद होती है और जब बॉलर गेंद फेंकता है तो आवाज के द्वारा इसको बताता है, तब छर्रों की आवाज से गेंद की लम्बाई और दिशा पहचानी जाती है। इसी प्रकार दृष्टिहीन खिलाड़ियों ने शतरंज में बड़ी सफलताएँ पाई हैं। किशन गांगुली ने लगातार छह बार राष्ट्रीय दृष्टिबाधित शतरंज चैंपियनशिप जीती और विश्व स्तर पर भारत का नाम रोशन किया।

इसके अलावा, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रूस के सर्गेई क्रायलोव विश्व दृष्टिबाधित शतरंज चैंपियनशिप में कई बार स्वर्ण पदक जीत चुके हैं। दृष्टिहीन खिलाड़ी सामान्य खिलाड़ियों की तरह ही सभी नियमों के तहत प्रतिस्पर्धा करते हैं, बस वे एक विशेष स्पर्शीय (tactile) शतरंज बोर्ड का उपयोग करते हैं।

आप खोजेंगे तो पायेंगे कि दृष्टिबाधित व्यक्तियों ने अपनी असाधारण क्षमताओं के बल पर दुनिया भर में कई क्षेत्रों में ऐतिहासिक और उल्लेखनीय योगदान दिया है।

हे तीसरी आँख जागृत करने वाले महापुरुषों! जिस प्रकार से लुई ब्रेल ने इनको ब्रेल लिपि देकर के एक सकारात्मक क्रान्ति इन के जीवन में ला दी थी उसी प्रकार आप भी इनको दृष्टि देकर के पूरे विश्व में सम्मान

प्राप्त करें नोबल पुरस्कार के अधिकारी बनें हमारी ऐसी इच्छा है।

हमने जब इण्टरनेट पर उन लोगों के बारे में पढ़ना चाहा, जिन्होंने अंधों को उनकी तीसरी आँख जागृत कर दृष्टि प्रदान करने का दावा किया है तो दो नाम विशेष रूप से सामने आये। पहले तो भारतीय स्वयंभू फ्रॉड गुरु नित्यानन्द। कहा जाता है कि उसने ८० अन्धे बच्चों को दृष्टि प्रदान की। पर जो स्वयं अनेकानेक दुष्कृत्यों के चलते अनेक धाराओं में आरोपी है और भाग करके अब किसी 'कैलासा द्वीप' का निवासी और स्वामी बना हुआ है, उसके दावों की सत्यता पर आप सहज ही निर्णय ले सकते हैं। दूसरे हैं रूस के **Bronnikov** (इस नाम को एवं अन्य विदेशी नामों को लिखते समय हम रोमन लिपि का ही प्रयोग करना उचित समझते हैं क्योंकि इनका उच्चारण ठीक से नहीं हो सकेगा) Bronnikov की शिक्षण पद्धति अन्य समान दावा करने वाले लोगों से भिन्न थी। संक्षेप में कहें तो यह कहा जा सकता है कि दोनों हथेलियाँ को मसलना फिर उनको ५-६ इंच दूर रखना उसके प्रभाव को अनुभव करना, एक हथेली से दूसरे को प्रभावित करने का प्रयास करना, बाद में ऐसा ही प्रयास दूसरे व्यक्ति के साथ करना इत्यादि इनकी पाठ्यविधि में शामिल हैं।

वस्तुतः Vyacheslav Bronnikov ने International Academy of Human Development की स्थापना की जहाँ वे अद्वितीय Human Development तकनीकें सिखाते थे, इनका दावा था कि इनकी विधि प्रशिक्षु के अन्दर एक आन्तरिक "Bio-Computer" को सक्रिय करती है। Bronnikov अपनी विधि को वैज्ञानिक-आध्यात्मिक विश्वसनीयता देने के लिए ताओवाद, यिन-यांग और "ऊर्जा" जैसी पूर्वी अवधारणाओं का सतही उल्लेख करते हैं, लेकिन उन मूल ग्रन्थों में "आँखों से बिना देखे पढ़ना" या "midbrain activation" जैसी कोई सिद्धि वर्णित नहीं है।

वस्तुतः यह "Bronnikov Method" बेहद Cult जैसी प्रकृति की है। Bronnikov का दावा है कि उन्हें यह जानकारी सोते समय तिब्बत के भिक्षुओं से प्राप्त हुई। अपने तरीकों को समझाने हेतु उन्होंने पुस्तकें भी लिखी हैं और यूक्रेन तथा अमेरिका में इनकी Training Academies चलती हैं। इसमें आदर्श रूप से २० से ३० वर्ष समर्पित करने होते हैं, और पाठ्यक्रम की कीमत लगभग $१०,००० से शुरू होती है।

Bronnikov की अकादमी का दावा है कि वे लोगों को Photographic Memory विकसित करना, बीमार न पड़ने की क्षमता, और सबसे विशेष "External Vision" यानी आँखों के बिना देखना सिखा सकते हैं। उनका दावा है कि वे अन्धे लोगों को जिनकी आँखें ही नहीं हैं फिर से या पहली बार देखने की क्षमता दे सकते हैं।

Vladimir Bronnikov - Vyacheslav के बेटे पिता की इसी पद्धति में प्रशिक्षित हैं और प्रदर्शनों में हिस्सा लेते रहे हैं। Vladimir के अनुसार इस "Psycho Bio-Computer" को शक्ति शरीर की "Genitourinary System" से मिलती है।

ब्रोनिकोव पद्धति (Bronnikov method) का प्रचार करने वाले एक वीडियो में, मॉस्को के ६ वर्षीय साशा लेविट ने आँखों पर पट्टी बाँधकर देखने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। उसने अपने आस-पास की चीजों का वर्णन किया और वहाँ मौजूद दर्शकों में से एक के द्वारा दिए गए मेडल पर छपी हुई लिखावट को पढ़कर सुनाया।

कथित तौर पर साशा ने अपनी भौतिक दृष्टि (physical vision) को भी ३ प्रतिशत से बढ़ाकर १३ प्रतिशत कर लिया। अपने "आन्तरिक बायो-कम्प्यूटर स्क्रीन" पर, साशा अपनी ही आँख के मोतियाबिन्द की जाँच कर लेता है, फिर वहाँ से वह कोशिकीय स्तर (cellular level) पर जाता है, जहाँ वह क्रोमैटिन (देखने का

गुणसूत्र आधार) को देखता है, उसकी जाँच करता है और बीमारी को ठीक कर लेता है। वह दावा करता है कि अपने शरीर की किसी भी असामान्यता को ठीक कर सकता है। साशा कहता है, "मेरे पास एक आन्तरिक दृष्टि है। मैं आन्तरिक कम्प्यूटर स्क्रीन को नियंत्रित कर सकता हूँ। मैं वहाँ संख्याओं को स्टोर कर सकता हूँ और बाद में उन्हें वापस याद कर सकता हूँ। मैं आँखें बन्द करके पढ़ सकता हूँ और मैंने एक फोटोग्राफिक मेमोरी विकसित कर ली है। "साफ बात है कि Bronnikov के शिष्य बन्द आँखों से केवल देखने का हुनर ही नहीं रखते बल्कि अपने अभ्यास से विकसित Inner बायो कम्प्यूटर से कोशिकीय स्तर पर जाकर गम्भीर से गम्भीर बीमारियों को ठीक कर लेते हैं। अगर यह सच है तो अन्य दावे इसके सामने शिशुवत् ही हैं, पर ये दावे सत्य हैं क्या?

पाठक सबसे पहले तो यह समझ लें कि यह शाशा लेविट का जो वीडियो है, वह Bronnikov के अपने Promotional Video का विवरण है, किसी स्वतन्त्र पत्रकार या वैज्ञानिक की जाँच रिपोर्ट नहीं। इस वीडियो में जो दावा किया है कि "मैंने अपनी भौतिक दृष्टि ३% से १३% तक बढ़ाई।" यह आँकड़ा कहाँ से आया, किस उपकरण से मापा गया कोई Medical Record या Ophthalmologist की रिपोर्ट कभी सार्वजनिक नहीं हुई।

वैज्ञानिकों का कथन : चिकित्सा विज्ञान या जीव विज्ञान में ऐसे किसी "आन्तरिक बायो-कम्प्यूटर" का कोई अस्तित्व नहीं है। इंसान का दिमाग सचेत रूप से अपने ही शरीर के अंदर कोशिकीय (cellular) या गुणसूत्र (chromosome) स्तर पर जाकर चीजों को नहीं देख सकता।

इसलिए इस चमत्कारी शक्ति से अपने क्रोमोसोम या प्रोटीन को देखकर मोतियाबिंद जैसी संरचनात्मक बीमारियों को केवल "निर्देश" देकर ठीक करने की क्षमता काल्पनिक है। वास्तविक जीवन में मोतियाबिंद के इलाज के लिए सर्जरी ही एकमात्र प्रामाणिक और प्रभावी चिकित्सा पद्धति है।

जो लोग तीसरी आँख के उदयन के दावेदार हैं वे तो कम से कम शाशा के कथन का खण्डन नहीं कर सकते क्योंकि शीशे के घर में रहते हुए दूसरे के घर पर पत्थर फैंकना बुद्धिमानी नहीं है।

कुछ रूसी शोधकर्त्ताओं ने ऐसे प्रयोगों के भागीदारों के EEG अध्ययन किये हैं ऐसा कहा गया है और उसमें वैज्ञानिकों ने Brain Activity में बदलाव देखा। लेकिन इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि Blindfold में आँखें बन्द करने पर Brain Activity बदलना स्वाभाविक है (क्योंकि मस्तिष्क अंधकार में अलग तरह काम करता है) लेकिन इससे यह सिद्ध नहीं होता कि व्यक्ति देख रहा है। यह केवल इतना सिद्ध करता है कि मस्तिष्क की Electrical Activity बदली, जो किसी के भी आँख बन्द करने पर होती है।

परीक्षण की चुनौती

जब Bronnikov को चुनौती दी गई या नियंत्रित स्थितियों में अपने दावों को सिद्ध करने को कहा गया, तो वे ऐसा करने में असमर्थ या अनिच्छुक रहे। उन्होंने एक ऐसे अन्धे लड़के का नाम तक नहीं बताया जिसकी बिना आँखों के भी दृष्टि वापस आई, जबकि उन्होंने ऐसा दावा किया था। इतनी बड़ी उपलब्धि और उस लड़के का नाम भी भूल गए, क्या यह सम्भव है?

ESO TV के परीक्षण

ESO TV एक यूरोपीय टीवी नेटवर्क है। इनकी टीम उक्त दावों की जाँच करने Moscow गई और उन्होंने Bronnikov के बेटे Vladimir का परीक्षण किया। टीम उत्साहित होकर गई थी, लेकिन ठगा हुआ और निराशा महसूस करते हुए लौटी। जो भी “आन्तरिक दृष्टि” के प्रदर्शन देखे गए, वे सस्ती चालबाजियों के अलावा कुछ नहीं थे। उन्होंने वीडियो में स्पष्ट सिर की हरकतें Capture कीं जो दिखाती हैं कि **Vladimir Blindfold** के किनारे से झाँक रहा था। इण्डियन कल्चरल फोरम के एक लेख के अनुसार भी, यूरोप में Bronnikov Method को "Eso TV International" ने अपने एक वीडियो में एक्सपोज किया, जिसमें उन्होंने स्थापित किया कि “प्रशिक्षित” लोग वास्तव में पूरी तरह ब्लाइंडफोल्ड नहीं होते बल्कि नाक और आँख कवर के बीच के एक छोटे छेद से देखते हैं। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि यहाँ भी Nasal Peak की बात कही गई है।

परामर्श– जो दिव्य दृष्टि का दावा करते हैं उनकी आँखों पर सबसे पहले रुई नहीं आटे की लोई लगाएँ, और चारों ओर से भली प्रकार पेस्ट कर दें। अब करें चमत्कार।

पाठकगण! हम विश्वभर के ऐसे दावे करने वालों का विवरण देने का प्रयास करेंगे। सर्वत्र उनके प्रयोगों में आपको एक ट्रिक common मिलेगी- **Nasal peak**, हैं न आश्चर्य कि आज भी यही कार्य कर रही है।

अब बात Derren Brown की

Derren Brown ब्रिटेन के सबसे प्रसिद्ध Mantalist, Illusionist, Writer और Skeptic माने जाते हैं। वे अपने अद्भुत Mind-Reading जैसे प्रदर्शनों के लिए मशहूर हैं, लेकिन साथ ही वे हमेशा स्पष्ट करते हैं कि उनकी क्षमताएँ “जादुई ट्रिक, सुझावों, मनोविज्ञान और **Showmanship**” पर आधारित हैं, कोई वास्तविक अतीन्द्रिय शक्ति नहीं। यही उन्हें ईमानदार और सत्यनिष्ठ बनाता है। वे "Derren Brown Investigates" नामक एक TV Series करते हैं जिसमें वे विभिन्न Paranormal और असाधारण दावों की जाँच करने जाते हैं।

इसी Series के एक Episode में Derren एक अंधी अंग्रेज महिला Judy को लेकर हॉलैण्ड गए। Bronnikov परिवार के पहले European Training School में। जहाँ उन्होंने Vyacheslav और Vladimir से मुलाकात की और चार दिवसीय पाठ्यक्रम में हिस्सा लिया, जिसका लक्ष्य Judy को उसकी दृष्टि वापस दिलाना था।

परिणाम क्या हुआ? सारे दावे फुस्स हो गए।

Judy को शरीर की किसी भी ऊर्जा का अनुभव नहीं हुआ और उसकी दृष्टि आन्तरिक या बाहरी, किसी भी रूप में सुधर नहीं पाई। **अगले अंक में जारी...........**

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

निवेदन हमारा – निर्णय आपका

❑❑❑

खुदीराम बोस आजादी के महानायक

अमर शहीद खुदीराम बोस का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उस युवा ऊर्जा का प्रतीक है, जिसने हँसते-हँसते फाँसी का फंदा चूम लिया था। मात्र १८ वर्ष की आयु में मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले खुदीराम का जीवन अदम्य साहस और गहरी भावनाओं से भरी एक गाथा है।

उनका जन्म ३ दिसमबर १८८९ को बंगाल के मिदनापुर जिले में हुआ था। उनके नाम के पीछे एक बहुत ही पीड़ादायक और भावुक लोक-मान्यता छिपी है।

तीन मुट्ठी अनाज (खुदी) की कीमत : खुदीराम के जन्म से पहले उनके माता-पिता के दो पुत्रों का बचपन में ही निधन हो गया था। उस समय समाज में मान्यता थी कि यदि नवजात शिशु को कोई और खरीद ले, तो उस पर से अकाल मृत्यु का साया हट जाता है। इसलिए, जन्म के तुरन्त बाद उनकी माँ ने उन्हें अपनी बड़ी बेटी (खुदीराम की बड़ी बहन) को तीन मुट्ठी 'खुद्दी' (चावल का टूटा हुआ हिस्सा या कण) के बदले 'बेच' दिया था। इसी 'खुद्दी' के कारण उनका नाम खुदीराम पड़ा। दुर्भाग्य से, जब खुदीराम मात्र ६ वर्ष के थे, तब उनके माता-पिता दोनों का देहान्त हो गया। उनका पालन-पोषण उनकी उसी बड़ी बहन अपरूपा देवी ने किया, जिन्होंने उन्हें खरीदा था।

खुदीराम बोस के मन में क्रान्ति का बीज उनके स्कूल के दिनों में ही उस समय के राष्ट्रीय माहौल ने बोया। जब लॉर्ड कर्जन ने १९०५ में बंगाल का विभाजन किया, तो पूरे बंगाल में 'स्वदेशी आन्दोलन' की लहर दौड़ गई। मात्र १६ वर्ष के खुदीराम ने भी विदेशी कपड़ों की होली जलाई और इंग्लैंड में बने सामानों का बहिष्कार करना शुरू किया।

उनके स्कूल के शिक्षक सत्येन्द्रनाथ बोस (जो स्वयं एक बड़े क्रान्तिकारी थे) ने खुदीराम के भीतर देशभक्ति की भावना को पहचाना और उन्हें प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त महर्षि अरविन्द घोष और भगिनी निवेदिता के व्याख्यानों ने खुदीराम को गहराई से प्रभावित किया। इन सब बातों का मिलाजुला परिणाम था कि उन्होंने अपना जीवन देश को समर्पित करने का निश्चय कर लिया।

खुदीराम बोस मुख्य रूप से बंगाल के सबसे प्रसिद्ध और गुप्त क्रान्तिकारी संगठन 'अनुशीलन समिति' से जुड़ गए। बाहरी रूप से तो यह समिति व्यायामशाला चलाती थी परन्तु दृढ निश्चयी युवकों को क्रान्ति के लिए तैयार करना ही इस समिति का लक्ष्य था। खुदीराम इस संगठन के मिदनापुर गुप्त समूह के सक्रिय सदस्य बन गए, जिसका नेतृत्व सत्येन्द्रनाथ बोस और ज्ञानेन्द्रनाथ बसु कर रहे थे। वे बहुत तेजी से संगठन के सबसे भरोसेमन्द और साहसी स्वयंसेवक बन गए, जो वंदे मातरम लिखे हुए पर्चे बांटने और अंग्रेजों को चकमा देने में माहिर थे।

उन दिनों डगलस किंग्सफोर्ड कलकत्ता का चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट था, और वह अपनी क्रूरता के लिए पूरे बंगाल में कुख्यात था। किंग्सफोर्ड उन युवा क्रांतिकारियों और छात्रों को बेहद कठोर, अपमानजनक और अमानवीय सजाएँ देता था, जो स्वदेशी आंदोलन में भाग लेते थे। छोटी-छोटी बातों के लिए वह कोड़े मारने की सजा सुनाता था। सुशील

सेन नाम के एक १५ साल के लड़के को 'वन्दे मातरम' बोलने के जुर्म में किंग्सफोर्ड की अदालत में पेश किया गया। किंग्सफोर्ड ने उस छोटे से बच्चे को सरेआम १५ कोड़े मारने की सजा सुनाई। हर कोड़े के साथ बच्चा 'वन्दे मातरम' चिल्लाता रहा, यहाँ तक कि उसका पूरा शरीर खून से लथपथ हो गया। क्रान्तिकारियों ने किंग्सफोर्ड को मौत के घाट उतारने का निश्चय किया, ताकि अंग्रेजों को यह सन्देश मिले कि भारतीयों पर अत्याचार का परिणाम मौत होगा।

किंग्सफोर्ड की जान को खतरा देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने उसका तबादला कलकत्ता से दूर बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में सत्र न्यायाधीश के रूप में कर दिया। लेकिन क्रान्तिकारी अपने निश्चय पर अटल थे। दण्ड देने की जिम्मेदारी खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी ने अपने कन्धों पर ली। वे मुजफ्फरपुर गए।

३० अप्रैल १९०८ को खुदीराम ने अपने साथी प्रफुल्ल चाकी के साथ मिलकर मुजफ्फरपुर (बिहार) के क्रूर अंग्रेज जज डगलस किंग्सफोर्ड को मारने की योजना बनाई। उन्होंने किंग्सफोर्ड की बग्घी पर बम फेंका, लेकिन दुर्भाग्य से उस दिन किंग्सफोर्ड उस बग्घी में नहीं था। उसमें दो ब्रिटिश महिलाएँ (मिसेज कैनेडी और उनकी बेटी) थीं, जिनकी मौत हो गई।

इस घटना का खुदीराम को गहरा पछतावा था। वे निर्दोष महिलाओं को नहीं मारना चाहते थे, उनका लक्ष्य केवल उस अत्याचारी जज को सजा देना था जिसने अनगिनत भारतीयों को कोड़े मारने और जेल भेजने की सजा दी थी।

खुदीराम पकड़े गए और जैसा सभी जानते ही थे उनको फांसी की सजा सुनाई गयी। जब जज ने उन्हें फाँसी की सजा सुनाई, तो खुदीराम मुस्कुरा रहे थे। जज को लगा कि शायद इस लड़के को सजा का मतलब समझ नहीं आया है। जब जज ने पूछा कि क्या तुम सजा का मतलब समझते हो, तो खुदीराम ने निडरता से कहा- "हाँ, और अगर मुझे थोड़ा समय मिले, तो मैं आपको भी बम बनाना सिखा सकता हूँ।" अब हैरानी की बारी जज की थी। वह उस किशोर राष्ट्रभक्त का मुँह देखता रह गया।

११ अगस्त १९०८ की सुबह जब उन्हें फाँसी के तख्ते की ओर ले जाया जा रहा था, तब उनके हाथ में भगवद् गीता थी और चेहरे पर एक अद्भुत मुस्कान। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जब जल्लाद उनके गले में फंदा डाल रहा था, तब खुदीराम ने मुस्कुराते हुए उससे पूछा था, "क्या फंदा ठीक से लग गया है?" यह सुनकर वहाँ मौजूद अंग्रेज अधिकारी भी काँप गए थे।

खुदीराम की शहादत ने पूरे बंगाल और देश में भावनाओं का एक ऐसा ज्वार ला दिया था जिसे अंग्रेज कभी समझ नहीं पाए। उनकी मृत्यु के बाद बंगाल के युवा इतने शोकाकुल और प्रेरित हुए कि जुलाहों ने एक खास तरह की धोती बुनना शुरू कर दिया। इस धोती के किनारे पर "खुदीराम" लिखा होता था। बंगाल के नौजवान इस धोती को पहनकर अंग्रेजों का विरोध करने लगे थे।

'एक बार बिदाय दे माँ': उनकी शहादत के बाद बंगाल में एक लोकगीत बेहद प्रसिद्ध हुआ-

"एक बार बिदाय दे माँ, घूरे आशि"

(माँ, मुझे एक बार विदाई दे, मैं फिर लौटकर आऊँगा)।

यह गीत आज भी बंगाल के कण-कण में गूँजता है और सुनने वालों की आँखें नम कर देता है। इसमें खुदीराम अपनी भारत माँ से वादा कर रहे हैं कि वे फाँसी पर चढ़कर फिर से इसी धरती पर जन्म लेंगे।

खुदीराम बोस उस चिंगारी का नाम था, जिसने आगे चलकर भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और सुभाष चन्द्र बोस जैसे अनगिनत क्रान्तिकारियों के दिलों में आजादी की आग जला दी थी।

प्रस्तुति- श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, गुलाब बाग

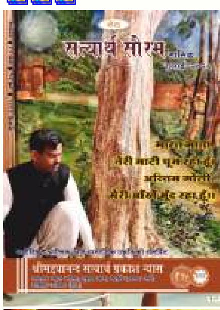

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु **श्रीमती तुलसी बाई पत्नी श्री गिरधारी लाल आर्य, उदयपुर** ने संरक्षक सदस्यता (₹11000) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद।
भवानीदास आर्य; मंत्री-न्यास

आर्यसमाज ने १५० वर्ष पूरे कर लिए। यह किसी संगठन के लिए कोई कम महत्व की बात नहीं है कि वह डेढ़ सदी का काल बीत जाने पर भी जीवित और गतिशील हो । गत १५० वर्षों में देश में होने वाले महत्वपूर्ण कार्यों में कोई भी ऐसा नहीं हैं जिसमें किसी न किसी रूप में आर्यसमाज का योगदान न रहा हो । आर्यसमाज और उसके संस्थापक से प्रेरणा पाकर अनेक लोगों ने धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की सेवा और रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। चाहे वह अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला, भगतसिंह, आजाद जैसे क्रान्तिवीर हों, चाहे शहीद पण्डित लेखराम और श्रद्धानन्द व गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे धर्मवीर हों, चाहे हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह और गोरक्षा आन्दोलन के बलिदानी वीर हों, चाहे कांग्रेस के साथ जुड़ कर स्वाधीनता संग्राम में जूझने वाले लाला लाजपतराय हों। इस देश की बलिदान माला में आर्यसमाज के ये और ऐसे अनेक हीरे, लाल और रत्न दूर से ही चमकते दिखाई पड़ेंगे। संसार में इनका कोई सानी नहीं हैं। आर्यसमाज का अब तक का इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। धार्मिक क्षेत्र में आर्यसमाज ने वह क्रान्ति की, जिसकी कहीं कोई मिसाल नहीं मिलती। तलवार के भय और धन के लोभ से विधर्मी बनाए गए हजारों आर्य भाइयों को पुनः वैदिक धर्म में ले आने का श्रेय तो इसे प्राप्त ही है परन्तु विचार-विनिमय, शास्त्रार्थ प्रवचन और लेखन के द्वारा आर्यसमाज ने अनेक विधर्मी मूर्धन्य विद्वानों, मुल्ला और पादरियों को वैदिक धर्म की दीक्षा लेने पर विवश कर दिया, जो किसी चमत्कार से कम नहीं है। विधर्मियों को अपने धर्म ग्रन्थों के अनुवाद (तर्जुमे) बीसों बार बदलने पर विवश होना पड़ा। शास्त्रार्थ समर में आर्य महाशयों ने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए और वे सदा के लिए पलायन कर गए। एतद्देशीय मतमतान्तरों के हजारों लोगों ने कण्ठियाँ तोड़, तिलक पोंछकर वैदिक धर्म की सहर्ष दीक्षा ली। अनेक बौद्ध और जैनमत के विद्वान् भी वैदिक धर्म में दीक्षित होकर आजीवन आर्यसमाज के आन्दोलन के अंग रहे।

समाज सुधार के क्षेत्र में भी आर्यसमाज अद्वितीय कर्म योगी संस्था रही है। नारी उत्पीड़न के विरुद्ध विधवा विवाह, नारी निकेतन, अनाथाश्रम खोलने के साथ, आन्दोलन के द्वारा संघर्ष करके भी अनेक को संरक्षा प्रदान की। सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा के लिए आवाज उठाने और उनके लिए कन्या विद्यालयों की स्थापना करने का श्रेय भी इसे ही जाता हैं।

जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था, छूतछात, ऊँच-नीच, जातपाँत के विरुद्ध संघर्ष करके अनेक शूद्र कहे जाने वाले लोगों के पुत्रों को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि बना कर गुणकर्म पर आधारित वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रारम्भ भी आर्यसमाज ने किया। अनेक उच्चवर्ण के लोगों ने अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह शूद्र कुलोत्पन्न गुरुकुल के स्नातकों के साथ सहर्ष कर दिया। आर्यसमाज ने यह भी एक इतिहास रचा है, जो किसी चमत्कार से कम नहीं हैं। यदि महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की यह बात पूरी कौम मान लेती तो आज यह अवर्ण-सवर्ण का द्वन्द कदापि न होता। परन्तु गाँधी जी ने हरिजन कौम पैदा करके आर्यसमाज के कार्य को बहुत बड़ी क्षति पहुँचाई। यह क्षति इस कौम के लिए भी अपूरणीय ही रहेगी।

शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्यसमाज ने बहुत बड़ी क्रान्ति की।

वेदों को बहुदेववाद और गड़रिया के गीतों की संज्ञा से मुक्त करा उन्हें एकेश्वरवाद का प्रथम प्रवर्त्तक और ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का बोधक, मानव मात्र का एक मात्र धर्मग्रन्थ और ईश्वरीय ज्ञान तथा विज्ञान के आसन के पद पर प्रतिष्ठित कराया। मृतप्राय संस्कृत भाषा को पुनर्जीवित करने हेतु अनेक गुरुकुल खोलकर समाज में शास्त्री, आचार्यों का ढेर लगा दिया। यही नहीं संस्कृत भाषा को ब्राह्मण नामधारियों की बपौती से मुक्त करा उसे सर्वसुलभ सर्वजन ग्राह्य बना दिया। देश में अनेक ऐसे विद्यालय खोले जिनमें बिना किसी भेदभाव के सभी जातियों के बालकों को राष्ट्रवादी भावना से ओत-प्रोत एकत्व और परस्पर प्रेम उत्पन्न करने वाली शिक्षा प्रदान की। शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का योगदान इस देश में अब तक भी बेजोड़ है। राष्ट्रोत्थान और प्रगतिशीलता का क्षेत्र भी आर्यसमाज से अछूता नहीं रहा। बालविवाह के विरुद्ध शारदा एक्ट (१९३०) लागू करवाना, मैरेज एक्ट-१९३७ पास कराकर अन्तर्जातीय आर्य विवाहों का प्रचलन व प्रोत्साहन, मृत्यु भोज और मृतक श्राद्धादि के विरुद्ध प्रचार करके समाज का बड़ा उपकार किया है। स्त्री, शूद्रों को पुरोहितों, सामन्तों आदि के शोषण से मुक्त कराने और उनको अधिकार वापस दिलवाने में आर्यसमाज कभी पीछे नहीं रहा। अभी कुछ समय पूर्व सती-प्रथा के विरुद्ध दिवराला यात्रा और हरिजन मन्दिर प्रवेश को लेकर नाथद्वारा यात्रा करने का श्रेय भी आर्यसमाज को ही जाता है।

गौरक्षा व कृषि क्षेत्र में भी सर्वप्रथम आर्यसमाज के प्रवर्तक ने ही आवाज उठाई। महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम

गोकृष्यादि रक्षिणी सभा बनाई तथा गौशालाएँ खुलवाई, जिनमें देश की प्रथम गौशाला राव तुलाराम के सहयोग से रिवाड़ी, हरयाणा में खोली गई। इसके पश्चात् स्वामी जी ने गौवध के विरुद्ध अंग्रेज सरकार में कानून बनवाने और गौवध सदा के लिए बन्द करवाने हेतु करोड़ों लोगों के हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन ब्रिटिश सरकार को दिया था। इनके साथ ही गौकरुणानिधि पुस्तक लिखकर उसकी सहस्रों प्रतियाँ जनसामान्य में छपवाकर बँटवाईं और गौ के महत्व से सबको परिचित कराकर उसकी रक्षा व पालन की प्रेरणा प्रदान की।

कर्मकाण्डीय क्षेत्र में भी पुरोहितों के षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़ करके शोषण युक्त कर्मकाण्ड से मुक्ति दिलाई। मूर्तिपूजा और स्वर्ग-नरक के भययुक्त पौराणिक कर्मकाण्ड के स्थान पर सदियों से उपेक्षित वैदिक कर्मकाण्ड की पुनः स्थापना की। जैनों और बौद्धों के आक्रमण से प्रताड़ित और लुप्तप्राय यज्ञ परम्परा का पुनः प्रचलन किया। आज हजारों घरों में प्रतिदिन वेद मन्त्रों के पाठ व यज्ञ हो रहे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आर्यसमाज का अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण और प्रेरणाप्रद रहा है, हमने उसकी थोड़ी सी बानगी ही अतीत के झरोखों से प्रदर्शित की है। हम यह भी कहते हैं कि-

शानदार था अतीत भविष्य भी महान् है।
यदि हम सम्हाल सकें, जो कि वर्तमान है।।

आर्य समाज को जो करना था, वह नहीं कर पाया क्यों?

इतना कुछ करने पर भी आर्यसमाज वह सब नहीं कर सका जो उसे करना आवश्यक था। उसका भी यहाँ वर्णन करना बहुत ही आवश्यक है। वास्तव में आर्यसमाज एक यथार्थ समाज के रूप में कभी प्रतिष्ठित नहीं हुआ। वह एक सहकारी संस्था से अधिक कुछ नहीं रहा। समाज का अर्थ है- एक कर्मकाण्ड से जुड़ा पारस्परिक हितचिन्ता से युक्त संगठन। आर्यसमाज का अर्थ था- वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित वैदिक कर्मकाण्ड से जुड़ा एक दूसरे की हितचिन्ता और हित साधन में तत्पर आर्यों का संगठन। आर्यसमाज के प्रवर्तक का यही स्वप्न था, उन्होंने यही आशा लगाई थी, जिसे हम पूर्ण नहीं कर सके।

महर्षि दयानन्द ने जन्म से मृत्यु पर्यन्त का सम्पूर्ण कर्मकाण्ड वेदानुसार हमें प्रदान किया था, परन्तु हम उसे प्रतिष्ठा प्रदान नहीं कर सके। वह आज तक सर्वत्र जोर जबरदस्ती से थोपा जाता हैं। वर और कन्या में से वर का पक्ष यदि आर्यसमाजी है तो वह कन्या पक्ष पर इसे थोपता है। यदि कन्या पक्ष आर्यसमाजी है तो वर पक्ष

उसकी छाती पर चढ़ कर वह सब कराता है जो वह नहीं चाहता। पता नहीं संस्कार विधि को कब प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। गुणकर्मानुसार वर्णों का निर्धारण करके सन्तान परिवर्तन और योग्यतानुसार अधिकार प्रदान करने का कार्य कब होगा, कौन करेगा, कहा नहीं जा सकता। जो छोटी जाति से आने वाले आर्य विद्वान् हैं वे अपने घर से बाहर आर्यसमाज के मंच पर पण्डित जी कहे जाते हैं परन्तु अपने घर गाँव में वही रहते हैं, जो उनकी जन्म जाति है। अपने बच्चों को वह संस्कारित करता है, सन्ध्या हवन सिखाता है, मांस-मदिरा आदि से दूर रखता है, इतना सब होने पर भी जब विवाह का समय आता है तो उसे विवश होकर अपनी संस्कारित सन्तान कूड़े-कचरे में ही फेंकनी पड़ती है। यह एक विडम्बना ही है। आर्य परिवारों के वैवाहिक सम्बन्ध जब तक आर्य परिवारों में ही नहीं होगें तब तक वास्तविक आर्यसमाज नहीं बन सकता और संस्कारविधि को भी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हो सकती। महर्षि दयानन्द आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की भगवान से प्रार्थना करते-करते कभी नहीं थकते थे। हम भारत को ही आर्य राष्ट्र नहीं बना सके। यही नहीं विश्वविद्यालयों में अभी तक वही पाश्चात्य ईसाई लेखकों के और वाममार्गियों के वेद भाष्य पढ़ाए जाते हैं। हम महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य और उनकी बताई पाठ विधि को लागू नहीं करा पाए।

भारतीय इतिहास का कालक्रम अभी तक ठीक-ठीक निर्धारित नहीं हो पाया। आर्य इसी देश के मूल निवासी थे या वे कहीं बाहर से आए थे, यह समस्या अभी तक ज्यों की त्यों है। विश्वविद्यालयों में इतिहास का विद्यार्थी अभी तक आर्यों को बाहर से आने वाले आक्रान्ताओं के रूप में ही जानता है और भारतीय इतिहास को मनगढ़न्त माइथालोजी या कपोल कल्पना मानता है।

उक्त महत्वपूर्ण कार्य जो आर्यसमाज को करने थे, उन्हें वह क्यों नहीं कर पाया यह प्रश्न भी विचारणीय है। कहते हैं जन्म के साथ मृत्यु भी लगी होती है और दोनों एक दूसरे के आमने-सामने रहते हैं। आर्यसमाज की स्थापना के समय से ही विरोधी शक्तियाँ उसके सामने खम ठोंक कर खड़ी थीं। जैसे जीवन का वेग प्रबल होने पर मृत्यु पीछे हटती जाती है, इसके लिए मनुष्य को अपना आहार, विहार, नियम, संयम व्यवस्थित रखना होता है, स्वास्थ्य का परीक्षण निरन्तर कराते रहना होता है, व्यायामादि भी करना होता है। थोड़े से आलस्य, प्रमाद, बदपरहेजी और असावधानी से मनुष्य को कई तरह के रोग लग जाते हैं, जो उसे जर्जर करते हुए मृत्यु की ओर जाने के लिए विवश कर देते हैं। समाज के साथ भी यही होता है। आर्यसमाज के साथ भी यही हुआ। उसकी काया में भी कई तरह के रोग लग गए क्योंकि उसके रक्षक असावधान और प्रमादग्रस्त हो गए।

जो आर्यसमाज कभी एक आग था और जिसे देखकर अमेरीका के एण्ड्रयू जैक्सन ने कहा था "मैं एक पवित्र प्रेम की आग देख रहा हूँ, जो संसार भर के पापों को भस्म कर देगी। वह आग भारत के एक संन्यासी दयानन्द सरस्वती के हृदय से निकली है और उसका नाम आर्यसमाज है।" आज वह आग राख का एक ढेर दीख रही है जिस पर कोई भी पाँव रख कर निकल जाता है। जिस आर्यसमाज के बिना देश की कोई ज्वलन्त समस्या हल नहीं होती थी, प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य में लोगों को उसका परामर्श लेना ही पड़ता था, आज छोटे-मोटे कार्यों में भी उसे कोई नहीं पूछता। उसकी आवाज की ओर कोई ध्यान नहीं देता। आज वह अतीत का बखान करके और बड़ी-बड़ी डींगे मारकर ही सन्तुष्ट हैं, किए धरे कुछ भी नहीं होता। हम चाहते हैं इसकी इस रुग्णावस्था और दुर्दशा का भी निदान कर लिया जावे।

महर्षि दयानन्द ने जब अपना कार्य प्रारम्भ किया, तो उन्हें जो अधिकांश सहयोगी मिले वे विश्वास योग्य नहीं मिले। हम पाते हैं कि उनके सत्यार्थप्रकाश प्रथम संस्करण में मृतक श्राद्ध व मांस-भक्षण आदि के समर्थक प्रकरण प्रक्षिप्त किए गए और उनके वेद भाष्य आदि लेखन कार्यों में नियुक्त ब्राह्मणों ने उनके अभिप्राय से भिन्न लिखा और उन्हें धोखा दिया। कुछ का उन्हें पता चल गया, कुछ का नहीं चल सका। यदि मुंशी समर्थदान जैसे ईमानदार सहयोगी न होते तो ये दुष्ट बहुत ही अनर्थ कर देते। दूसरी ओर सामन्ती अभिजात्य वर्ग व जन्म जाति के अभिमानी तथाकथित सवर्ण लोग जिन्हें सदियों से सामान्य जनता का खून मुँह लग चुका था, उन्हें दयानन्द की गुणकर्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था पसन्द नहीं आई वे लोग भी उसके विरोधी हो रहे थे।

एक तीसरा वर्ग भी दयानन्द का घोर विरोधी था, वह था ब्रिटिश साम्राज्य और उनका फरमाबरदार भारतीय समुदाय जिसमें राजे महाराजे, रायसाहब जमींदार आदि प्रमुख थे। नाना सम्प्रदायों के माध्यम से भारतीय मानसिकता को बाँटने और जीवन दर्शन की एकता समाप्त कर पारस्परिक फूट व कलह उत्पन्न कराने वाले धर्माचार्यों, गुरुओं और पण्डे पुरोहितों ने भी दयानन्द को न जीने देने की कसम खा रखी थी।

उक्त सब लोगों ने सर्वप्रथम दयानन्द के लेखन कार्य को दूषित करवाने का प्रयत्न किया। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में मांसभक्षण, मृतक श्राद्ध व भूतप्रेतादि का प्रक्षेपण करवाना इसी योजना के अंग थे। दयानन्द के भक्त राजा जयकृष्ण दास जैसे लोगों पर भी स्वामी दयानन्द को धोखा देने का आरोप लगा है। प्रक्षेप के कार्य में इन लोगों को आंशिक सफलता भी मिली परन्तु उसका प्रतिकार पर्याप्त रूप में स्वामी जी ने कर दिया।

अब इन लोगों ने स्वामी दयानन्द को जान से मार देने का विचार बनाया। फलस्वरूप उन्हें कई बार विष दिया गया और अन्ततः इन लोगों ने दयानन्द की जान ले ली। स्वामी दयानन्द की जान लेने में, ब्रिटिश हुकूमत और राजाओं का ही मुख्य रूप से हाथ था, शेष लोग तो मात्र उसके निमित्त बन गए क्योंकि उनके भी कुछ निजी स्वार्थ थे। स्वामी दयानन्द की हत्या के पश्चात् अब आर्यसमाज की हत्या करना बाकी रह गया था। अतः उसके लिए भी योजनाबद्ध कार्य प्रारम्भ किया गया। सर्वप्रथम आर्य समाज के सदस्यों को प्रताड़ित करने, डराने-धमकाने, जाति बहिष्कृत करवाने आदि के कार्य किए गए।

आर्यसमाज के इतिहास में इन जुल्मों की दास्तान पढ़ी जा सकती है। परन्तु जब आर्य लोग जुल्म सहकर भी विचलित नहीं हुए तो दूसरी तरह का प्रयत्न हुआ। नीम सरकारी और सरकार पिट्ठू लोगों को आर्य समाज का सदस्य बनाया गया और आर्य समाजों में इन्होंने अपना वर्चस्व स्थापित करके उसके आन्दोलनात्मक स्वरूप को समाप्त कर दिया। **सैद्धान्तिक कट्टरता शनैः-शनैः समाप्त होती गई और समझौतावादी प्रवृत्ति बढ़ती गई।** इस तरह के कार्य करने वाले लोगों में राय मूलराज जैसे लोगों का नाम गिना जा सकता है। इन लोगों ने आर्यसमाज के राष्ट्रवादी स्वरूप को विकृत कर उसे सरकार भक्त संस्था बनाने का षड्यन्त्र किया। परिणामतः आर्यसमाज एक वास्तविक समाज के रूप में विकसित न हो सका मात्र एक सहकारी संस्था बनकर रह गया।

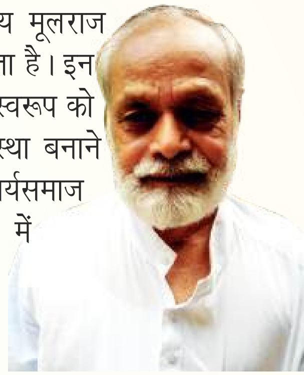

क्रमशः ......

- आचार्य वेदप्रिय शास्त्री
सीताबाड़ी रोड़, केलवाड़ा
जिला- बांरा (कोटा)

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण: AC. No.: 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

१८ अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विशेष

१९४२ का भारत छोड़ो आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह निर्णायक चरण था, जिसमें पूरे देश में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन-आक्रोश की लहर फैल गई थी। यह केवल बड़े राष्ट्रीय नेताओं के भाषणों और प्रस्तावों तक सीमित आन्दोलन नहीं था, बल्कि गाँवों, कस्बों, छोटे नगरों और स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की सक्रिय भागीदारी से आकार लेने वाला व्यापक जन-आन्दोलन था। इसी व्यापकता के भीतर उत्तर प्रदेश के चन्दौली जनपद का धानापुर क्षेत्र भी स्वतंत्रता-संघर्ष की एक साहसपूर्ण भूमि के रूप में उभरा। वहाँ के लोगों ने न केवल अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी, बल्कि अपने बलिदान और संगठन-शक्ति से यह प्रमाणित किया कि आजादी की चेतना जनसाधारण के भीतर कितनी गहराई तक पहुँच चुकी थी।

उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार धानापुर क्षेत्र में इस आन्दोलन का नेतृत्व हेतमपुर निवासी कामता प्रसाद विद्यार्थी ने किया। उनके साथ मंहगू सिंह, रघुनाथ सिंह और हीरा सिंह जैसे स्थानीय कार्यकर्त्ता भी जुड़े हुए थे।

१६ अगस्त १९४२ को आन्दोलनकारियों ने धानापुर थाने पर तिरंगा फहराया। यह घटना प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि औपनिवेशिक सत्ता के चेहरे पर सीधी चुनौती थी। उस समय किसी थाने पर राष्ट्रीय ध्वज फहराना ब्रिटिश शासन के लिए खुली अवज्ञा थी। यही कारण है कि इस घटना ने अंग्रेजी प्रशासन को असमंजस और भय में डाल दिया। कुछ विवरणों में यह भी कहा गया है कि धानापुर क्षेत्र लगभग दस दिनों तक अघोषित रूप से स्वतंत्र बना रहा। एक छोटे-से क्षेत्र में जनता का ऐसा उभार इस बात का प्रमाण था कि स्वतंत्रता का विचार अब केवल शहरों और सभाओं तक सीमित नहीं रहा था, बल्कि वह गाँवों और तहसीलों की धड़कन बन चुका था।

इस संघर्ष की कीमत भी बहुत भारी थी। मंहगू सिंह, रघुनाथ सिंह और हीरा सिंह और साथी शहीद हो गए। इन नामों के साथ धानापुर कांड केवल एक राजनीतिक घटना नहीं रह जाता, बल्कि बलिदान की गाथा बन जाता है। कामता प्रसाद और विद्यार्थियों ने यह दिखा दिया कि स्वतंत्रता केवल नीतियों, प्रस्तावों और समझौतों से नहीं आती; उसके लिए साहस, संगठन, त्याग और रक्त की आवश्यकता पड़ती है। यही कारण है कि धानापुर की घटना स्थानीय जनमानस में आज भी स्मरणीय है।

धानापुर काण्ड की ऐतिहासिक महत्ता इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह ग्रामीण भारत की राजनीतिक चेतना को उजागर करता है। अकसर स्वतंत्रता-संग्राम की चर्चा करते समय बड़े शहरों, प्रसिद्ध नेताओं और राष्ट्रीय घटनाओं को ही केन्द्रीय स्थान मिल जाता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि देश की स्वतंत्रता का आधार गाँवों और कस्बों में ही तैयार हुआ था। साधारण किसान, मजदूर, छात्र, युवा और स्थानीय कार्यकर्त्ता जब एक साथ किसी अत्याचारी सत्ता के विरुद्ध खड़े होते हैं, तो इतिहास का प्रवाह बदलता है। धानापुर में भी यही हुआ। वहाँ के लोगों ने यह प्रमाणित किया कि देशभक्ति केवल भाषणों का विषय नहीं, बल्कि जीवन की जोखिमभरी जिम्मेदारी है। थाने पर तिरंगा फहराना उनके लिए सिर्फ एक राजनीतिक प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और स्वाधीनता की सार्वजनिक घोषणा थी।

अन्ततः धानापुर की घटना हमें यह सिखाती है कि भारत की स्वतंत्रता कोई एकल क्षण नहीं थी, बल्कि असंख्य छोटे-बड़े संघर्षों का सम्मिलित परिणाम थी। देश के कोने-कोने में उठी ऐसी ही अनेक चिंगारियों ने मिलकर स्वतंत्रता की ज्वाला को प्रज्ज्वलित किया। धानापुर का काण्ड उन अनगिनत स्थानीय संघर्षों में से एक था, जिसने यह सिद्ध किया कि आजादी की लड़ाई का वास्तविक बल जनता के भीतर था। इसलिए जब हम १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन को याद करते हैं, तो धानापुर के साहसी लोगों, उनके बलिदान और उनके तिरंगे को भी समान सम्मान के साथ स्मरण करना चाहिए।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

कोई भी महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना हो, कोई क्रान्तिकारी कदम उठाना हो अथवा कोई नया कार्य प्रारम्भ करना हो तो प्रायः कहा जाता है कि उसे करने से पूर्व पहले अपनी आत्मा की आवाज सुनो और जानो कि ये ठीक रहेगा या नहीं। अपने अन्तर्मन की बात सुनो। कोई भी उलझन हो तो दिल जो कहता है वही करो। आत्मा, दिल अथवा अन्तर्मन की बात मानकर कार्य करेंगे तो परिणाम अच्छा होगा और सफलता मिलेगी। मैं इस बात से पूर्णतः सहमत नहीं रहा इसलिए वर्षों इस पर चिंतन करता रहा कि अन्तर्मन, आत्मा अथवा दिल की आवाज से क्या तात्पर्य है? यह आवाज कहाँ से आती है अथवा इसका स्रोत क्या है? क्या ये तीनों एक ही हैं अथवा अलग-अलग हैं? जहाँ तक दिल की बात है वह शरीर का एक भौतिक अंग है जिसे हृदय कहते हैं। हृदय की भौतिक सत्ता होती है लेकिन मन या आत्मा की भौतिक सत्ता नहीं होती। यदि होती भी है तो आजतक तो उसका प्रमाण नहीं दिया जा सका है। जहाँ तक मन अथवा आत्मा को समझने की बात है बड़े-बड़े तत्त्वज्ञानी भी इसको सही-सही नहीं समझ पाते केवल उपलब्ध शास्त्रों के आधार पर ही इनकी व्याख्या करते रहते हैं। ऐसी व्याख्याएँ कई बार परस्पर विरोधी भी होती हैं। इससे प्रश्न और उलझकर रह जाते हैं।

कई बार ये भी कहा जाता है कि मन की बात सुनो मस्तिष्क की नहीं। क्या मस्तिष्क की बात भी सुनी जा सकती है? वास्तव में मस्तिष्क की बात सुनी ही नहीं जा सकती क्योंकि मस्तिष्क का कार्य आदेश देना नहीं आदेश मानना है। मस्तिष्क सोचने का नहीं निष्पादन का कार्य करता है। जो हम सोचते हैं अथवा करने का निर्णय लेते हैं मस्तिष्क उसके निष्पादन में सहायक होता है। जैसे ही हम किसी कार्य को करने का फैसला करते हैं अथवा दृढ़ संकल्प लेते हैं मस्तिष्क की अरबों-खरबों कोशिकाएँ जिन्हें न्यूरॉन्स कहा जाता है उस कार्य को पूर्ण करने के लिए सक्रिय हो उठती हैं और जब तक कार्य सम्पन्न नहीं हो जाता लगी रहती हैं। इन्हीं कोशिकाओं अथवा न्यूरॉन्स की सक्रियता के कारण हमारे शरीर में अपेक्षित उपयोगी रसायनों अथवा हार्मोंस का उत्सर्जन प्रारम्भ हो जाता है जिसके कारण हम स्वयं भी कार्य की सफलता के लिए न केवल अपना सम्पूर्ण योगदान देने के लिए तैयार हो जाते हैं। अपितु पूर्ण सफलता की प्राप्ति तक चैन से नहीं बैठ सकते। लेकिन इससे अन्तर्मन, आत्मा अथवा दिल की आवाज के स्रोत अथवा महत्त्व का पता नहीं चलता।

पिछले दिनों अचानक रोशनी की एक किरण दिखलाई पड़ी। एक दिन मैं अपने पौत्र के साथ पार्क में घूमने और उसे झूले झुलाने ले गया था। तभी वहाँ एक विदेशी युवती दिखलाई पड़ी जो अपने सवा-डेढ़

साल के पुत्र को झूला झुला रही थी। मैंने अनुमान लगाया कि वो रूसी है। मेरा सारा ध्यान उन पर केन्द्रित हो गया। जैसे ही उसने अपने पुत्र से कुछ कहा मेरे मुँह से अनायास ही रूसी भाषा में निकला, ''अरे! आप रूसी हैं? उसने भी मेरी ओर देखा और प्रसन्न होते हुए कहा, हाँ, क्या आप रूसी भाषा जानते हैं?" उसके बाद उससे रूसी भाषा में ही बातचीत हुई। मैं साढ़े तीन दशक से भी ज्यादा समय बाद किसी से रूसी भाषा में बात कर रहा था। मुझे स्वयं पर आश्चर्य भी हुआ कि मैं एकदम रूसी भाषा में बात कर रहा हूँ लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी क्योंकि मैंने चार दशक पूर्व अच्छी प्रकार से रूसी भाषा सीखी थी। लेकिन जब मैं किसी को जापानी, चीनी अथवा अन्य कोई भाषा जो मुझे नहीं आती बोलते सुनता हूँ तो ऐसा नहीं होता। न तो मुझे पता चलता है कि अमुक व्यक्ति वास्तव में कौन सी भाषा बोल रहा है और न मैं उसके साथ उसकी भाषा में बोल ही पाता हूँ। कारण स्पष्ट है और वो ये है कि मैंने ये भाषाएँ कभी सीखी ही नहीं हैं।

जहाँ तक मेरे रूसी भाषा बोलने का प्रश्न है लम्बे समय तक प्रयोग में न आने के कारण रूसी भाषा मेरे अवचेतन या अचेतन मन की गहराइयों में लुप्त हो गई थी लेकिन जैसे ही अवसर मिला वो चेतन मन में प्रकट होने लगी। भाषाएँ ही नहीं ऐसी बहुत सी चीजें जो कभी न कभी हमारे अनुभव में आई होती हैं हमारे मन की तहों में दबी पड़ी रहती हैं। लेकिन जापानी, चीनी अथवा अन्य कोई भाषा जो मुझे नहीं आतीं वास्तव में मेरे मन के अचेतन या अवचेतन मन का हिस्सा बनी ही नहीं अतः किसी भी रूप में इनके बाहर आने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसी प्रकार से कोई भी उपयोगी सुझाव या मार्गदर्शन जिसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हमने अनुभव ही नहीं किया अथवा हमारे अचेतन या अवचेतन मन का हिस्सा ही नहीं बना हमारे अन्तर्मन की आवाज बन ही नहीं सकता। यदि ऐसी कोई अन्तर्मन की आवाज वास्तव में होती तो हम क्यों अच्छी-अच्छी बातें सीखते अथवा अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाए रखने के लिए जी तोड़ मेहनत करते? केवल अन्तर्मन की आवाज के सहारे हम अच्छे से अच्छा कार्य कर लेते। अन्तर्मन की आवाज सुनकर कार्य करने का तात्पर्य यही है कि हम सोच-समझकर अच्छे से अच्छा निर्णय लें।

हमारा मन बिल्कुल एक कम्प्यूटर की तरह कार्य करता है। एक कम्प्यूटर की तरह ही उसमें जो डालते हैं उसी में से आवश्यकतानुसार बाहर आता है या बाहर लाया जा सकता है। अब प्रश्न उठता है कि अन्तर्मन की बात सुनने का क्या अर्थ हो सकता है? अन्तर्मन की बात सुनने का अर्थ यही है कि मन की भीतरी तहों को खंगालकर उसमें से अपने हित की बात निकालना। लेकिन ये सबके लिए हितकर ही होगी इस बात का कोई सही-सही जवाब देना सम्भव ही नहीं क्योंकि हर व्यक्ति अपने मन की बात को सही ही नहीं सर्वोत्कृष्ट भी मानता है और उसे ही प्राथमिकता देता है। इसी के कारण द्वंद्व तथा वैमनस्य उत्पन्न होता है। किन्हीं दो या अधिक व्यक्तियों के मन की बात का परस्पर विरोधी होना और उससे द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होना सिद्ध करता है कि हर व्यक्ति के मन की हर बात का कोई महत्त्व नहीं होता। हर व्यक्ति के मन की बात व्यक्ति सापेक्ष हो सकती है

लेकिन जरूरी नहीं कि वो समय सापेक्ष अथवा काल सापेक्ष भी हो। अन्तर्मन की बात वास्तव में व्यक्ति विशेष के मन में संचित विचारों अथवा भावों की प्रतिध्वनि मात्र है।

अन्तर्मन की बात में मन शब्द बड़ा महत्त्वपूर्ण है। मन क्या है? वास्तव में मन हमारे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष अनुभवों का संग्रह मात्र है जिससे हमारी विचार-प्रक्रिया निर्धारित होती है। हमारा समग्र व्यक्तित्व वास्तव में हमारे इन्हीं अनुभवों और सोच का परिणाम है। हम अपने जीवन में जो कुछ भी अच्छा या बुरा सीखते हैं वो सब हमारे मन में संचित हो जाता है। जो अनुभव कभी काम में नहीं आते वे मन में बहुत गहरे में जाकर दफन हो जाते हैं। उनमें से कुछ अनुभव ज्यादा गहरे में दफन होकर हमारे अचेतन मन का हिस्सा बन जाते हैं तो कुछ अनुभव कम गहरे में दफन होकर हमारे अवचेतन मन का हिस्सा बन जाते हैं। जब यही अनुभव हमारे चेतन मन में आते हैं अथवा चेतन मन में सप्रयास लाए जाते हैं तो हमारे चेतन मन का हिस्सा बन जाते हैं और अन्तर्मन की बात कहलाते हैं। अन्तर्मन की बात वास्तव में हमारी उत्कट इच्छा मात्र है जिसका हमने अपनी बुद्धि अथवा विवेक के अनुसार चुनाव किया है और जिसे हम हर हाल में पूर्ण होते हुए देखना चाहते हैं अतः अन्तर्मन की बात को अत्यधिक महत्त्व देना भी मात्र भावुकतापूर्ण विचार ही है।

अब ये तो जरूरी नहीं कि हमारे सभी अनुभव अच्छे या बुरे अथवा उपयोगी या अनुपयोगी ही हों। कुछ अनुभव अच्छे हो सकते हैं तो कुछ बुरे भी लेकिन ये सभी अनुभव हमारे मन की सम्पत्ति बन जाते हैं। ये संचित अनुभव ही हमारे दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात होते हैं। जब हम दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुनने की बात करते हैं तो सम्भव है कि हम अपने निहित स्वार्थों के चलते गलत अनुभवों का चुनाव कर बैठें जिसके परिणामस्वरूप गलत कार्य करने को विवश हो जाएँ। हम कैसे निर्णय करें कि हमारे मन की बात सही है या नहीं? तो ऐसे में सही या गलत को जाने बिना दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुनने का क्या लाभ? जिस व्यक्ति के मन में केवल अनुपयोगी अथवा नकारात्मक विचार भरे हों वो कैसे किसी उपयोगी अथवा सकारात्मक विचार का चुनाव कर सकता है? जो व्यक्ति पक्षपातपूर्ण हो अथवा राग-द्वेष से भरा हो कैसे उसके दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात को महत्त्व दिया जा सकता है?

एक व्यक्ति जिसके मन में लालच भरा है कितनी ही दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुने वो लालच छोड़ नहीं सकता? यदि एक लालची व्यक्ति लालच छोड़ देता है तो ये उसके दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात कैसे हुई? एक चोर, लुटेरा, हत्यारा अथवा बलात्कारी भी अपने दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुनने के कारण ही चोरी, लूट, हत्या अथवा बलात्कार जैसे वीभत्स कार्य से विरत नहीं होता अपितु दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुनकर ही वो मजे में चोरी, लूट, हत्या अथवा बलात्कार जैसे गलत कामों को अंजाम देता है। दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात पर ही कोई व्यक्ति लोक-कल्याण के कार्य करने के लिए आगे आकर अपना सारा जीवन लोगों के जीवन को स्वर्ग बनाने में

लगा देता है तो इसी दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात पर ही कोई कोई शासक छद्म विकास अथवा लोक-कल्याण के नाम पर तानाशाह बन बैठता है और लोगों का जीवन नर्क बना डालता है। मात्र कुछ

लोगों के अन्तर्मन की आवाज के कारण दुनिया के लोगों को भयंकर युद्धों को झेलना पड़ा है।

पुरुषार्थ हो या अकर्मण्यता दोनों का ही चुनाव विचारों के वशीभूत होकर किया जाता है। जब तक किसी कार्य को करने का विचार न बने तब तक वह कार्य किया ही नहीं जा सकता और विचार मन की ही देन या उपज है। यही दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुनने की प्रक्रिया है। मन बहुत गड़बड़ करवा देता है अतः दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुनना सदैव हितकर ही हो ये संभव नहीं। यदि मन में संचित अच्छा अनुभव विचार रूप से कार्य रूप में परिणत हो जाए तो अच्छा परिणाम होगा अन्यथा बुरा व घातक परिणाम होने में सन्देह नहीं। दिल की आवाज या अन्तर्मन की बात सुनने से उत्पन्न घातक परिणामों से बचने के लिए मन की साधना या मन को साधना बहुत जरूरी है। कबीर की एक साखी है-

मन के मते न चालिए मन के मते अनेक,
जो मन पर असवार है सो कोई साधु एक।

हर स्थिति में केवल अपने मन के अनुसार चलना ठीक नहीं क्योंकि मन विविध मतों वाला होता है। उसमें न तो कोई स्थायित्व ही होता है और न एकरूपता ही होती है। हर व्यक्ति का मन अलग-अलग दिशाओं में जाता है। मन अलग-अलग तरह से सोचता है और अलग-अलग प्रकार से प्रतिक्रिया करता है। किसी एक व्यक्ति का मन भी सदा समान नहीं रहता। वह पल-पल बदलता रहता है। व्यक्ति का हर अनुभव उसे बदल देता है। मन के विषय में कहा गया है कि वह संकल्पविकल्पात्मक है। कभी इसका चुनाव करता है तो कभी उसका चुनाव करता है। उसमें परस्पर विरोधी भाव भरे रहते हैं। ऐसे में दिल की बात मान लेना या अन्तर्मन की आवाज सुन लेना कई बार बहुत ही घातक हो सकता है। जो मन की संकल्पविकल्पात्मक स्थिति से मुक्त होकर, मन के पार होकर अथवा मन को नियंत्रित कर सही कार्य का चुनाव कर उसे सम्पन्न कर सके ऐसा व्यक्ति दुर्लभ होता है। जो ऐसा कर सके उसी की सोच उत्तम है और वही साधु है। ऐसे साधु के मन की बात ही उपयोगी व उत्तम हो सकती है।

हमारे मन रूपी कम्प्यूटर में जहाँ अधिकांश कूड़ा-कचरा भरा होता है हम उसमें से उपयोगी सामग्री या विचार कैसे निकालें यह बड़ा जटिल व महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। यहाँ हमें विवेकशील होने की जरूरत है। विवेक के द्वारा ही काल व स्थान के अनुसार उपयोगी व अनुपयोगी विचारों अथवा कार्यों में अन्तर्भेद किया जा सकता है। विवेकी व्यक्ति ही सकारात्मक चिन्तन द्वारा सही विचारों का चयन कर उन्हें कार्य रूप में परिणत कर सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हम सदैव अपना दृष्टिकोण सकारात्मक बनाए रखने पर जोर दें। यदि हमारी सोच पूर्णतः सकारात्मक हो जाए तो सारी समस्याएँ ही समाप्त हो जाएँ। लेकिन प्रायः ऐसा सम्भव नहीं होता। इसीलिए विवेक अनिवार्य है। जिस प्रकार से हमारे अन्य सभी अनुभव हमारे मन के हवाले हो जाते हैं अथवा हम प्रयास करके उन्हें अपने मन के हवाले कर देते हैं उसी प्रकार से विवेकशीलता को भी मन के हवाले करना अथवा मन में विवेकशीलता की कंडीशनिंग करना भी अनिवार्य है। ध्यानावस्था में अथवा मन को शान्त-स्थिर अवस्था में ले जाकर निम्नलिखित स्वीकारोक्तियाँ करने से ही हम सही अर्थों में मन की बात सुनने की कला का विकास कर पाएँगे-

- मैं अपने जीवन में केवल सकारात्मक व सर्वोपयोगी विचारों का ही चयन करता हूँ और उन्हें कार्य रूप में परिणत करता हूँ।
- मुझमें सकारात्मक व सर्वोपयोगी विचारों के चयन अथवा विवेक से कार्य करने की पूर्ण क्षमता है।
- मैं अपनी विवेकशीलता के प्रति पूर्णतः आश्वस्त हूँ और अपने मन की सही बात सुनकर पूर्ण विश्वास के साथ उसे कार्य रूप में परिणत करता हूँ।

ए. डी. 106 सी., पीतम पुरा
दिल्ली - 110034, चलभाष- 9555622323

हम सूर्य और चन्द्रमा को हमारे जीवन में हम बहुत महत्व देते हैं। इसी सन्दर्भ में अथर्ववेद का एक मन्त्र अवलोकनीय है-

यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुमत्।
ऐषा त्वं कासे प्र पत समुद्रस्यानु विक्षरम्॥

- अथर्ववेद ६/१०५/३

अर्थात्- हे मनुष्य! जैसे सूर्य की किरणें शीघ्र आगे बढ़ती जाती हैं, वैसे तू ज्ञान और उपाय के बीच अन्तरिक्ष के प्रवाह स्थान की ओर आगे बढ़।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में भी कुछ ऐसे ही कहा है-

तन्तुं तन्वन्नजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धियो कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥

- ऋग्वेद १०/५३/६

हे मनुष्य! ज्ञान के तन्तु को तनते हुए तू लोक के प्रकाशक सूर्य का नियम पालन कर, उसका अनुसरण कर और मनुष्य बन। तथा और लोगों को भी दिव्य ज्ञान का उपासक बना।

यहाँ हमारे सामने एक प्रश्न उठता है कि जीवन में सूर्य और चन्द्रमा को इतना महत्व क्यों दिया है, क्या उनको महत्व देने का कोई विशेष प्रयोजन है? वास्तव में इस रहस्य से बहुत कम व्यक्ति परिचित हैं। सूर्य-चन्द्रमा से जीवन में सीखने की अनेक बातें हैं, उनके कई गुण हैं जो हमें जीवन की उन्नति का सन्देश देते हैं। इसलिए मन्त्र में सूर्य का अनुसरण करने का उपदेश किया है। वे क्या गुण हैं? इन पर विचार करते हैं।

सूर्य का पहला गुण - अन्धकार दूर करना शीत में गर्मी देकर सुख प्रदान करना। सूर्य प्रकाश और अग्नि पुंज है, उसके उदय होते ही अन्धकार नष्ट हो जाता है, शीत के कष्टों से मुक्ति मिलती है। सूर्य मानव को प्रेरणा देता है कि जीवन में अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर कर ज्ञानरूपी प्रकाश से हम स्वयं प्रकाशित होकर उसे चहुँ ओर फैलाएँ।

अज्ञान मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। मनुष्य की सबसे बड़ी क्षति भी अज्ञानता से है। मनुष्य को मनुष्यता से दूर रखने वाला कोई कारण है तो भी वह अज्ञान ही है। समस्त दुखों और क्लेशों का कोई कारण है तो वह अज्ञान ही है। इसीलिए प्रार्थना में हम **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** कहते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अज्ञान रूपी अन्धेरे से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाए।

आचार्य चाणक्य ने मनुष्य के लिए सबसे बड़ा कलंक और पृथ्वी का भार 'अज्ञानता' को मानते हुए कहा कि, मनुष्य जीवन मिलने पर भी यदि वह ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता है, तो उसका जीवन पृथ्वी पर भार ही है। इसलिए मन्त्र में सूर्य के इस गुण को जीवन में आत्मसात करने का उपदेश दिया ताकि हम अज्ञान रूपी अन्धेरे को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश को प्राप्त करें। ताकि स्वयं सुखी रहें और अपने ज्ञान से दूसरों को भी सुखी करें।

सूर्य का दूसरा गुण- गन्दगी को नष्ट करना

जहाँ-कहीं ऐसे पदार्थ हैं, जो गन्दगी, दुर्गन्ध फैलाते हैं, सूर्य अपनी प्रचण्ड किरणों से उसकी गन्दगी व दुर्गन्ध नष्ट कर देता है।

वर्तमान समय में चहुँओर समाज के विचारों में सुख-सुविधा, भौतिकता ने गहरा प्रभाव डाल रखा है। मनुष्य के अपने स्वार्थ के कारण पानी, हवा और विचारों में भी आज प्रदूषण फैलता जा रहा है। इन सबका परिणाम अनेक प्रकार के रोगों का जन्म व बुद्धि प्रदूषण है। इस दुष्कृत्य से ही मानवता आज अनेक कष्टों से कराह रही है। समाज सुगन्ध के स्थान पर दुर्गन्ध फैलाने में ही लगा है, परमात्मा की इस सृष्टि को अपने कर्मों से दूषित कर रहा है।

मन्त्र के माध्यम से हमें सूर्य के इस गुण को जीवन में उतारने का सन्देश देकर बताया है कि हम भी सूर्य की भाँति बुराइयों, प्रदूषणों और गन्दगी को दूर कर इस सृष्टि को स्वच्छ, सुगन्धित बनाने का प्रयास करें। सुविचारों से तामसी प्रवृत्तियों का नाश कर पृथ्वी को दुर्विचारों से मुक्त करें।

सूर्य का तीसरा गुण- ऊर्जा का संचार

यदि सूर्य की किरणें पृथ्वी तक न आती तो अन्न, फल, फूल, औषधि से हमें वंचित रहना पड़ता। बिना सूर्य के इनका उत्पादन ही सम्भव नहीं है। इसलिए संसार के प्राणियों के जीवन निर्वाह की सामग्री सूर्य के बिना सम्भव नहीं है। यह कितना बड़ा उपकार है। मन्त्र में मनुष्य को सूर्य की किरणों की भाँति ही सृजनात्मक प्रवृत्ति जीवन में अपनाकर रचनात्मक कार्य करने का सन्देश सूर्य से ग्रहण करना चाहिए। ताकि हम भी जीवन में ऊर्जावान बनकर परोपकार में अपना जीवन लगाएँ, दूसरों की आवश्यकता व सुविधा प्रदान करने की हममें भी ऊर्जा समाहित हो।

सूर्य का चौथा गुण- उदय और अस्त में समानता

सूर्य जब उदय होता है और अस्त होता है उस समय उसका रंग एक समान होता है। प्रातः और सायंकाल में एक जैसा ही वरुण रंग आकाश मण्डल में दृष्टिगोचर होता है।

सूर्य का यह रूप मानव को सीख देते हुए बताता है

कि जिस प्रकार सूर्य उदय होते समय व अस्त होते समय एक समान रहता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी दोनों स्थितियों में एक समान रहना चाहिए।

दोनों स्थिति से तात्पर्य उपलब्धि व अभाव, सुख या दुःख से है। ये जीवन की धूप-छाँव हैं। कभी मनुष्य को बहुत कुछ प्राप्त हो जाता है, कभी बहुत कुछ उससे दूर हो जाता है। एक कहावत है-

कभी घी घना, कभी गुड़ चना, कभी वो भी मना।

ऐसी स्थिति में सामान्यतः मनुष्य की मानसिकता अस्थिर व असामान्य हो जाती है। कुछ उपलब्धि हो गई, गुण, ज्ञान, सम्पत्ति, रूप मिल गया तो जीने के भाव ही बदल गए। अपने निकट वालों से ही रिश्ता तोड़ दिया। फूले नहीं समा रहे हैं। उपलब्धि ने, घमण्ड ने विचारों को बदल दिया, अपने को ही सब कुछ मान बैठे। इसके विपरीत कुछ नुकसान हो गया या दुःख आ गया तो अपने को सबसे बड़ा दुःखी मानकर दुःख में ही डूब गए। थोड़े से दुःख ने जीवन का चिन्तन और दिशा ही बदल दी।

परन्तु मन्त्र हमें यह सन्देश देता है कि चाहे दुःख हो अथवा सुख, अभाव हो अथवा बहुत बड़ी उपलब्धि- दोनों ही स्थिति में समान व्यवहार रखकर संयमित रहो। न कोई उपलब्धि होने पर पागल बनो और न दुःख आने पर अपनी आत्मा की दुर्बलता मानकर परेशान हो जाओ।

महाभारत, उद्योग पर्व, अध्याय ४०, श्लोक १२ में महात्मा विदुर कहते हैं-

धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये।
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः।।

धर्म नित्य (सदा रहने वाला और शाश्वत) है, जबकि सुख-दुःख अनित्य (क्षणिक/बदलने वाले) हैं। इसी प्रकार, जीवात्मा नित्य है, लेकिन उसके कर्मों का कारण अनित्य है।

इसी भाव को एक प्रसिद्ध श्लोक में कहा गया है-

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तसमये तथा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

अर्थात्- सूर्य उदय के समय लाल होता है और अस्त के समय भी लाल ही होता है। उसी प्रकार महापुरुष सम्पत्ति (सफलता) और विपत्ति (कठिनाई) दोनों में समान रहते हैं। उनका स्वरूप और आचरण परिस्थितियों से नहीं बदलता।

सूर्य का पाँचवाँ गुण- नियमितता और सीमा में रहना

सूर्य-चन्द्रमा का एक गुण सीमा में रहना भी है। सूर्य और चन्द्रमा अपनी परिधि में एक निश्चित सीमा में रहकर सबको जीवनदान दे रहे हैं। यदि ये अपनी सीमा छोड़ दें, थोड़ा ऊपर-नीचे हो जाएँ तो सर्वनाश हो जाए। इनका अपनी-अपनी सीमा में रहने से ही सबका कल्याण हो रहा है।

सूर्य-चन्द्रमा का यह गुण समाज के लिए बड़ा अनुकरणीय है। हम भी अपनी-अपनी सीमा में अपने को प्राप्त साधनों में सन्तुष्ट रहते हुए दूसरों के अधिकारों का हनन न करें, उनके अधिकारों पर अतिक्रमण न करें तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाए।

चन्द्रमा का गुण- शीतलता

चन्द्रमा का प्रकाश रोशनी के साथ-साथ शीतलता प्रदान करता है। चन्द्रमा के इस गुण के समान हमारे व्यवहार से भी दूसरों को शीतलता मिले, ऐसा प्रयास प्रत्येक मानव का होना चाहिए। समाज आज द्वेष की ज्वाला में धधक रहा है। अनेक कारणों से मानवीय विचार व व्यवहार एक दूसरे के प्रति घृणा की आग फैला रहें हैं, जिसमें धू-धू करती मानवता जल रही है। इस पर नियन्त्रण करने के लिए चन्द्रमा के इस गुण को अपनाकर हम समाज में शीतलता युक्त व्यवहार करें और दूसरों को सुख पहुँचावें। **क्रमशः.......**

- प्रकाश आर्य
मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य भारत

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य,** मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया,** संयुक्तमंत्री-न्यास

स्वास्थ्य

हिक्का (हिचकी)

कारण और चिकित्सा

हिक्का एक वात-कफ प्रधान और आमाशय से उत्पन्न होने वाला रोग है। वात प्रकोपक, कफ प्रकोपक व अग्निमांद्यकर आहार-विहार हिक्का के कारण होते हैं। अम्ल और कटुरस के अधिक सेवन से हिचकी का होना व्यवहार में देखा जाता है। महास्रोतस में क्षोभ होने पर उरः प्राचीरा पेशी (Diaphragm) के सहसा बन्द हो जाने पर हिचकी आने लग जाती है। कुछ रोगों के उपद्रव के रूप में भी हिचकी का होना पाया जाता है। महर्षि चरक ने अतिसार, ज्वर, छुर्दि, प्रतिश्याय, उरःक्षत, क्षय, रक्तपित्त, उदावर्त, विशूचिका, अलसक और पाण्डूरोग के उपद्रव के रूप में हिक्का का होना बताया है।

हिक्का पाँच प्रकार की होती है। १. महाहिक्का २. गम्भीरा हिक्का ३. व्यपेता हिक्का ४. क्षुद्र हिक्का और ५. अन्नजा हिक्का। ये हिक्का के भेद उसके स्वरूप के आधार पर किये गये हैं। दोष की दृष्टि से सभी हिक्का वात-कफ प्रधान होती हैं। महाहिक्का महावेगवाली, गम्भीरा हिक्का गम्भीर ध्वनियुक्त, व्यपेता हिक्का आहार के पाचन के बाद होने वाली, क्षुद्रा हिक्का मृदु लक्षणों वाली और अन्नजा हिक्का मात्रा से अधिक खाने पर महाप्राचीरा पेशी में क्षोभ उत्पन्न होकर होने वाली होती है।

साध्यासाध्यता- अत्यधिक दोष प्रकोप के कारण होने वाली हिक्का, भोजन न करने व रोगों के कारण अत्यधिक कमजोर व्यक्ति की हिक्का, बहुत अधिक व्यायाम व श्रम करने वाले व्यक्ति की हिक्का, प्रलाप, तृष्णा व मोहयुक्त व्यक्ति की हिक्का, महाहिक्का व गम्भीर हिक्का प्रायः असाध्य होती है, शेष सभी हिक्का उपचार से ठीक हो जाती हैं।

चिकित्सा- वैसे तो प्रायः सामान्य कारणों से उत्पन्न हिचकी कुछ सेकण्डों या मिनटों में स्वयं ही शान्त हो जाती है फिर भी अगर हिचकी बन्द न हो तो कुछ घरेलू उपायों से ठीक हो जाती है। ये उपाय बिना विशेषज्ञ की सहायता के घर में किये जा सकते हैं और इनका कोई हानिकारक प्रभाव भी नहीं होता है। यदि किसी अज्ञात कारणवश हिचकी बन्द नहीं होवे तो कुछ साधारण हानिरहित आयुर्वेद के औषध योग हैं जिनके सेवन करने से हिचकी शान्त हो जाती है। इनका वर्णन नीचे लिखा जा रहा है।

- यदि हिचकी के रोगी का पेट साफ हो तो उसे अभ्यान्तर कुम्भक प्राणायाम करवायें। श्वास को अन्दर भरकर रोककर रखें, अधिक से अधिक समय तक प्राणवायु को अन्दर रोकने का प्रयास करें। जब घबराहट होने लगे तो धीरे-धीरे श्वास को बाहर छोड़ देवें। इस प्राणायाम से हिचकी बन्द हो जाती है।
- इसी प्रकार बलपूर्वक श्वास को बाहर निकालकर यथाशक्ति बाहर ही रोककर रखने से भी हिचकी बन्द हो जाती है। इस प्राणायाम को बाह्य कुम्भक कहते हैं।
- दो-तीन मिनट गर्म पानी से गरारे करने से भी हिचकी में आराम हो जाता है।
- बर्फ वाले शीतल जल से गरारे करने से हिचकी आना बन्द हो जाती है।
- शीतला के एक-दो गिलास अत्यन्त मन्द गति से पीने पर हिचकी आना बन्द हो जाती है।
- अचानक अप्रत्याशित रूप से कमर में थप्पड़ मार देने पर हिचकी बन्द हो जाती है।
- गर्दन के पीछे एकाएक बिना सावधान किये बर्फ रख देने से हिचकी रुक जाती है।
- सूरती खाण्ड का एक चम्मच निगल लेने पर हिचकी रुक जाती है।
- यदि छोटे बच्चे को हिचकी आ रही हो तो थोड़े पानी में आधा चम्मच खाण्ड घोलकर पिलाने से तुरन्त रुक जाती है।
- साफ रुमाल की सहायता स जिह्वा को बीच से पकड़कर खिंचने से हिचकी तुरन्त बन्द हो जाती है।
- दोनों घुटनों को मोड़कर छाती पर दबाव देने से हिचकी बन्द हो जाती है।
- बर्फ की थैली को पसलियों के नीचे महाप्राचीरा पेशी पर रखने से भी हिचकी तुरन्त बन्द हो जाती है।
- बर्फ चूसने से भी हिचकी की रुक जाती है।

यदि उपरोक्त उपायों से हिचकी बन्द नहीं हो तो निम्न घरेलू नुस्खों का प्रयोग करें।

- नींबू, पुदीने अथवा सौंफ में से किसी एक की चाय बनाकर पीवें।
- नींबू को काटकर आधे नींबू पर नमक व कालीमिर्च लगाकर चूसें।
- नींबू का रस १ चम्मच, शहद १ चम्मच, काला नमक १ ग्राम इन तीनों को मिलाकर बार-बार चाटने से हिचकी आना बन्द हो जाता है।
- उत्तम प्रकार की हरड़ और सौंठ का चूर्ण दोनों को बराबर मिलाकर १-१ ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार गर्म जल से लेने पर हिचकी बन्द हो जाती है।
- मयूरपिच्छ भस्म २५० मिली ग्राम व पिप्पली चूर्ण ५०० मिली ग्राम को शहद में मिलाकर दिन में तीन बार चाटने पर हिचकी अवश्य बन्द हो जाती है।
- सैंधव लवण का संतृप्त घोल बना कर दोनों नासिकाओं में तीन-तीन बूँद डालने से हिचकी तुरन्त बन्द हो जाती है। यह प्रयोग कभी असफल होते नहीं देखा गया है।

हिचकी के कारण कई बार मनुष्यों को बहुत कष्ट होता है। उपरोक्त प्रायः सभी उपाय शास्त्र सम्मत हैं और हानिरहित हैं। आशा है आपत्काल में पाठक इनसे लाभान्वित होंगे। किसी गम्भीर रोग के उपद्रव के कारण हिक्का आती हो तो चिकित्सक से परामर्श करें।

- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३- श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर- ६, उदयपुर (राज.)

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

गतांक से आगे .....

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन को यदि हम देखें, तो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, परमपिता परमात्मा के वेदज्ञान के सत्य स्वरूप को मानवमात्र के समक्ष दिग्दर्शित करने के लिए और समाज में व्याप्त बुराइयों का समूल नाश करने हेतु इस भारत भूमि को अज्ञान के अंधकार से त्राण दिलाने के लिए उन्होंने क्या-क्या नहीं सहा? अपमान सहा, गालियाँ सहीं, लाठियों के प्रहार सहे, यहाँ तक कि अपने जीवन पर बीसों बार आक्रमण सहे; परन्तु अपने लक्ष्य से वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। कवि ने ठीक ही लिखा है-

पिलाए जहर के प्याले उन्हीं नादान लोगों ने,
कि वे जिनके लिए अमृत का प्याला लेकर आए थे।

जब स्वामी जी पुणे पहुँचे, तो वहाँ भी उनके साथ इसी प्रकार का व्यवहार हुआ।

पुणे में स्वामी दयानन्द जी के प्रवास और उनके द्वारा दिए गए व्याख्यानों ने जनसामान्य पर दो प्रकार का प्रभाव डाला। अनेक लोग ऐसे थे जो स्वामी जी की वेद-सम्मत मान्यताओं को सुनकर अत्यन्त प्रभावित थे और स्वामी दयानन्द को 'युग पुरुष' मानते थे; परन्तु अनेक ऐसे लोग भी थे जो स्वामी जी के कथनों के विरुद्ध ही नहीं थे, बल्कि उनसे इतने चिढ़े हुए थे कि झूठा प्रचार करके स्वामी जी को बदनाम करने में उन्हें किंचित् भी लज्जा नहीं आती थी। पाठक इसे एक-दो उदाहरणों से समझ सकते हैं।

वस्तुतः स्वामी जी वर्ण का निर्धारण जन्म से नहीं मानते थे। सभी मानवों को समान मानते हुए वे वेदों पर सभी का अधिकार मानते थे। मूर्तिपूजा वेद-सम्मत नहीं है, यह उनका दावा था। ये सब बातें उन लोगों को पसन्द नहीं आईं, तो स्वामी जी पर दोष लगाए जाने लगे, वे भी बिलकुल झूठे!

स्वामी जी के प्रवास के दौरान ही किसी ने रात में गणपति और अहिल्या की मूर्तियाँ नाले में फेंक दीं। इससे हो-हल्ला मचना ही था और वैसा ही हुआ। लोग कहने लगे कि इसी दयानन्द के बहकाने से लोग मूर्तिपूजा के विरुद्ध हो गए हैं और यह काम उन्होंने ही किया है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए कुछ लोगों ने कहना शुरू किया, "अरे, यह दयानन्द तो पंढरपुर गया था और वहाँ जाकर उसने विठोबा की मूर्ति को तोड़ दिया।" अब यह एक ऐसी बात थी जिसका न कोई सिर था, न पैर; क्योंकि स्वामी जी तो कभी पंढरपुर गए ही नहीं थे।

एक और समूह यह अफवाह फैलाने लगा कि दयानन्द ने अपने एक व्याख्यान में रामचन्द्र जी को 'भड़वा' कहा था और यह भी कहा था कि रावण को प्रसन्न करने के लिए ही रामचन्द्र ने सीता जी को स्वयं उसके पास भेजा था। ये ऐसी बातें थीं जिन पर कोई कभी विश्वास नहीं कर सकता था। महर्षि दयानन्द के हृदय में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगीराज श्रीकृष्ण के प्रति जो भक्ति-भाव था, वह किसी से छिपा नहीं था। 'सत्यार्थ प्रकाश' में तो स्वामी जी ने श्रीकृष्ण को 'आप्त पुरुष' बताया है। पुणे के एक समाचार पत्र ने तो यहाँ तक लिख दिया कि स्वामी दयानन्द के भाषण हिन्दू धर्म पर आक्रमण हैं और इस प्रकार के आक्रमणों से सिपाही विद्रोह के समान दूसरा विद्रोह होने की सम्भावना है। सत्य-असत्य से उन लोगों को कुछ लेना-देना नहीं था; वे तो बस येन-केन-प्रकारेण लोगों को दयानन्द से विमुख करना चाहते थे ताकि वे पुणे से दूर चले जाएँ।

परन्तु इस तरह की प्रतिक्रियाओं के स्वामी जी अब तक अभ्यस्त हो चुके थे। वैसे भी सत्य के प्रकाशन में वे इस प्रकार के मान-अपमान की तनिक भी परवाह नहीं करते थे।

यहाँ पुणे में उनके ५४ व्याख्यान हुए, जिनमें से १५ व्याख्यानों को महादेव गोविन्द रानाडे ने सम्पादित किया और वे 'उपदेश

मंजरी' के नाम से हिन्दी में भी प्रकाशित हुए। जब स्वामी जी का पुणे से विदाई का अवसर आया, तो भक्तों ने सम्मान प्रदर्शन के लिए ५ सितम्बर १८७५ को एक शोभायात्रा का आयोजन किया। इसमें स्वामी जी से हाथी पर सवार होने का निवेदन किया गया, परन्तु स्वामी जी हाथी पर नहीं बैठे और अन्य लोगों के साथ पैदल ही चले। इस जुलूस में लगभग ४,००० व्यक्ति मौजूद थे।

इस शोभायात्रा से स्वामी दयानन्द के जो विद्वेषी थे, उनके हृदय ईर्ष्या से भर उठे। उन्होंने एक नया स्वांग रचा। उन्होंने एक गधे को सजाया, उस पर गेरुए रंग की झाल डाली और उस पर 'गर्दभानन्द सरस्वती' लिख दिया। पुणे नगर के कुछ उपद्रवी तत्व इस जुलूस को लेकर चल दिए। इनकी संख्या प्रारम्भ में अधिक नहीं थी, फिर भी उपद्रव के लिए थोड़े से लोग ही काफी होते हैं।

शाम के समय जब स्वामी जी की शोभायात्रा भिड़े के बाड़े के पास पहुँचने वाली थी, तभी वहाँ यह गर्दभ दल भी आ गया

और 'स्वामी गर्दभानन्द की जय' इत्यादि के नारे लगाने लगा। इन लोगों ने स्वामी जी के जुलूस पर ईंट-पत्थर आदि फेंकने आरम्भ कर दिए। कोई दो घण्टे तक इस प्रकार का उपद्रव चलता रहा और पुलिस तमाशा देखती रही; पुलिस ने तनिक भी हस्तक्षेप नहीं किया। फिर जब किसी ने उच्च अधिकारियों तक सूचना पहुँचाई, तब उन्होंने आकर जैसे-तैसे उपद्रव को शान्त किया। पुलिस का पक्षपात साफ दिखाई दे रहा था। उन्होंने मौके से केवल एक व्यक्ति को पकड़ा और तीन बाद में पकड़े गए। न्यायाधीश ने भी मुकदमा सुनते हुए इस पक्षपात का अनुभव किया और इस पर कड़ी टिप्पणी भी की। उन उपद्रवियों को तीन-तीन महीने की सजा हुई।

जहाँ तक स्वामी दयानन्द के मन पर इस अशोभनीय काण्ड के प्रभाव का प्रश्न है, तो पाठक इसी से जान सकते हैं कि इतना सब कुछ होने पर भी, जब उपद्रव शान्त हो गया, तो स्वामी जी ने व्याख्यान तो दिया; परन्तु उस व्याख्यान में इस अभद्र घटना का उल्लेख तक नहीं किया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

डॉ. विनय विद्यालंकार ने सम्भाला सचिव का कार्यभार

आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों के देश एवं विदेश में प्रचार-प्रसार के लिए अहर्निश समर्पित, वैदिक संस्कृति, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृत साहित्य के गहन अध्येता, व्याख्याता एवं उपदेष्टा वाग्मी वरेण्य आदरणीय डॉ. विनय विद्यालंकार

जी ने उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी, हरिद्वार के माननीय सचिव के रूप में नवीन दायित्व एवं कार्यभार ग्रहण किया है। इस गौरवपूर्ण अवसर पर आपको हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। आपका यह कार्यकाल निश्चित रूप से संस्कृत एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं समुन्नयन के लिए स्मरणीय सिद्ध होगा, यही मंगलकामना करता हूँ।

वैदिक ज्ञान पुस्तिका-पत्रकों का लोकार्पण समारोह

आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर-४, उदयपुर द्वारा आयोजित लोकार्पण समारोह में रविवार को समाज द्वारा जनहितार्थ नव प्रकाशन सत्य सनातन वैदिक ज्ञान पुस्तिका, ईश्वर प्रार्थना के वेद मंत्रों और भजनों के पत्रकों का लोकार्पण श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल के अध्यक्ष अशोक आर्य द्वारा किया गया। उपमंत्री भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि वैदिक ज्ञान के सार रूप में परिचायक पुस्तिका और पत्रकों के माध्यम से जन-जन तक सनातन वैदिक ज्ञान को पहुँचाने के उद्देश्य से समाज के इस प्रकाशन पर बधाई देते हुए

अशोक आर्य ने वैदिक साहित्य के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बिना साहित्य के विचार लम्बे समय तक जिन्दा नहीं रहते अतः इस प्रकार का वैदिक साहित्य समाज को वैदिक संस्कृति से परिचित करवाने हेतु महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इस अवसर पर इन तीनों प्रकाशनों के आर्थिक सहयोगी समाज संरक्षक प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया, शारदा गुप्ता और अम्बालाल सनाढ्य का गायत्री मंत्र पट्टिका से अभिनन्दन किया गया। वेद मंत्र पाठ की व्याख्या सहित प्रस्तुति समाज मंत्री वेद मित्र आर्य ने की। भजन चन्द्रकला आर्य और यज्ञ सरला आर्या द्वारा किया गया। स्वागत उद्बोधन कार्यकारी प्रधान और संरक्षक भंवरलाल आर्य ने दिया। इस अवसर पर प्रधान संजय शांडिल्य, उप प्रधान कृष्ण कुमार सोनी और ललिता मेहरा, उप मंत्री सुभाष चन्द्र कोठारी, पुस्तकालय अध्यक्ष सत्य प्रकाश शर्मा सहित बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे। सरला आर्या के पौरोहित्य में यज्ञ से आरम्भ समारोह का समापन इन्द्र प्रकाश वैदिक द्वारा करवाए गए शान्ति पाठ, जयघोष और प्रसाद वितरण के साथ हुआ। इस समारोह में बड़ी संख्या में आर्यजनों ने उन्हें वितरित पुस्तिका और पत्रकों से लाभान्वित होने का संकल्प लिया।

- भूपेन्द्र शर्मा, उप मंत्री; आर्य समाज हिरण मगरी

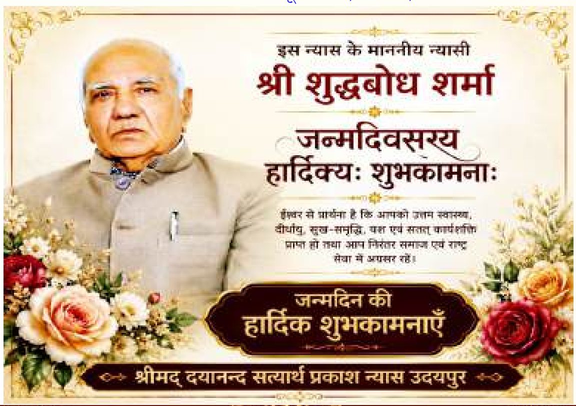

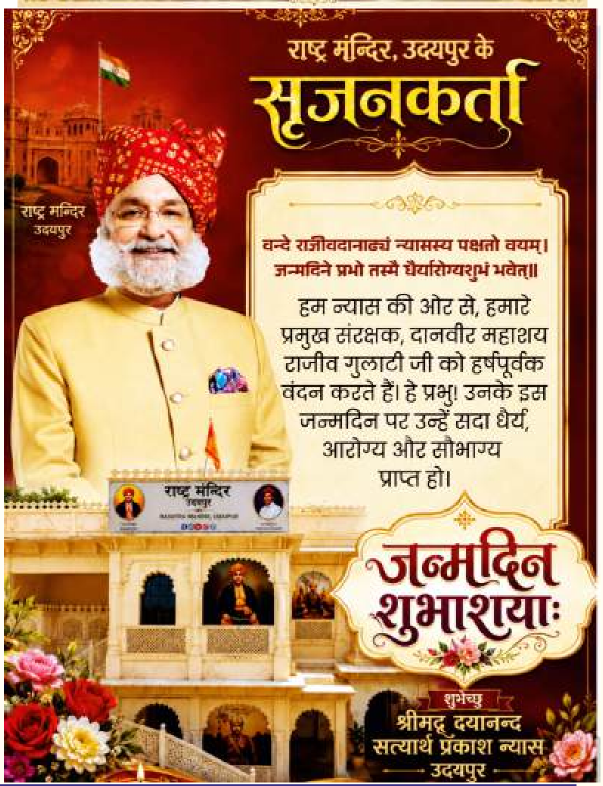

वैदिक मंत्रोच्चार : प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का अद्भुत संगम

भारत की सनातन वैदिक परम्परा में मन्त्रों को केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि ध्वनि विज्ञान और ऊर्जा का एक शक्तिशाली माध्यम माना गया है। सदियों से हमारे ऋषि-मुनियों का यह दावा रहा है कि मन्त्रों के सटीक उच्चारण से उत्पन्न होने वाली ध्वनियाँ (Vibrations) शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती हैं। आज का आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा जगत् भी इन प्राचीन दावों की वैज्ञानिक कसौटी पर पुष्टि कर रहा है।

क्या कहता है नया वैज्ञानिक शोध?

हाल ही में नई दिल्ली स्थित 'मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान' (Morarji Desai National Institute of Yoga) द्वारा किया गया एक नया अध्ययन इस दिशा में बेहद उत्साहवर्धक परिणाम लेकर आया है। इस शोध के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति मात्र ५ मिनट तक 'महामृत्युंजय मंत्र' या 'शान्ति मंत्र' का जप करता है और उसके तुरन्त बाद कुछ

मिनट का विश्राम करता है, तो इससे उसके हृदय स्वास्थ्य में अभूतपूर्व सुधार देखने को मिल सकता है।

'इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ बायोलॉजिकल एण्ड मेडिकल रिसर्च' में प्रकाशित इस रिसर्च को ३० स्वस्थ योग विद्यार्थियों पर किया गया था। इस अध्ययन का सबसे प्रमुख निष्कर्ष यह है कि मन्त्रोच्चार से हार्ट रेट (हृदय गति), ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) और दिल पर पड़ने वाला अनावश्यक दबाव कम हो सकता है।

कैसे काम करता है मंत्रोच्चार का विज्ञान?

अध्ययन में एक बेहद दिलचस्प बात सामने आई है। जब व्यक्ति मन्त्र का सस्वर पाठ करता है, तो उस दौरान लयबद्ध श्वास और स्वर तंत्र के उपयोग के कारण हृदय की गतिविधि (Heart activity) में थोड़ी वृद्धि होती है। लेकिन, असली जादू इसके बाद शुरू होता है। जैसे ही व्यक्ति जप पूरा करके विश्राम की अवस्था (Relaxation state) में जाता है, उसके शरीर और तंत्रिका तंत्र (Nervous system) में स्पष्ट और गहरी शान्ति के संकेत मिलते हैं। यही गहरी शिथिलता तनाव के स्तर को गिराती है और ब्लड प्रेशर को सामान्य करने में मदद करती है।

वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के अन्य लाभ

महामृत्युंजय मंत्र जैसे वैदिक मन्त्रों में विशेष अक्षरों और ध्वनियों का संयोजन मिलता है। जब इनका सही तरीके से उच्चारण किया जाता है, तो-

तनाव में कमी : यह मस्तिष्क में अल्फा (Alpha) और थीटा (Theta) तरंगों को उत्तेजित करता है, जिससे मानसिक तनाव और एंग्जायटी (घबराहट) दूर होती है।

श्वास तंत्र में सुधार : मंत्रोच्चार के दौरान सांस लेने और छोड़ने की एक निश्चित लय बन जाती है, जो फेफड़ों की क्षमता (Lung capacity) को बढ़ाती है और प्राणायाम जैसा लाभ देती है।

एकाग्रता : ध्वनि के कम्पन एकाग्रता (Focus) बढ़ाते हैं, जिससे स्मरण शक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

आधुनिक जीवनशैली में जहाँ तनाव, हाइपरटेंशन और हृदय रोग आम होते जा रहे हैं, वहाँ यह अध्ययन एक नई किरण लेकर आया है। यह साबित करता है कि हमें स्वस्थ रहने के लिए हमेशा महंगी दवाओं पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। हमारी अपनी जड़ों में छिपी वैदिक मन्त्रों की शक्ति को यदि हम अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लें। दिन में केवल पाँच मिनट निकालकर हम एक स्वस्थ और शान्त जीवन की ओर कदम बढ़ा सकते हैं।

शिव संकल्पों के साथ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी; उदयपुर द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय बाल संस्कार शिविर का समापन सेक्टर-४ स्थित समाज परिसर में श्रेष्ठ मानव बनने के शिव संकल्पों के साथ रविवार को सम्पन्न हुआ। शिविर संयोजक भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि संरक्षक प्रो. डॉ. अमृत लाल तापड़िया की अध्यक्षता में समारोह का आरम्भ वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ यज्ञ से हुआ। यज्ञ की आहुतियाँ में प्रशिक्षणार्थियों ने बुराइयों को छोड़कर अच्छाइयों को ग्रहण करने का संकल्प लिया। उर्वशी शर्मा के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थियों ने आत्मरक्षा की तकनीकों का प्रभावी प्रदर्शन किया। शिविर के प्रशिक्षक गीताव्रती राजू जोशी, प्रीतम सिंह चुण्डावत, सुरेश पालीवाल और सीमा कुमावत का गायत्री महामंत्र पट्टिका और स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया गया। सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र, स्मृति चिह्न और पुरस्कार समाज संरक्षक भँवर लाल आर्य, उपप्रधान- कृष्ण कुमार सोनी, प्रधान- संजय शांडिल्य, मंत्री- वेदमित्र आर्य, प्रचार मंत्री- सरला आर्या, नरेन्द्र माथुर द्वारा वितरित किए गए। सत्य सनातन वैदिक धर्म की जीवन्त झाँकियों, महापुरुषों की जीवनी सम्बन्धी चित्रदीर्घा, सोलह संस्कार, पंच महायज्ञ आदि का अवलोकन और राष्ट्र भक्ति की प्रेरणा हेतु गुलाब बाग स्थित नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का शैक्षणिक भ्रमण करवाया गया। चन्द्र कला आर्या, दुर्गा कुमावत, प्रीति चौहान, बेला सिसोदिया, शकुन्तला माहेश्वरी, कशिश टेलर को शिविर में प्रशिक्षण सहयोग हेतु गायत्री महामन्त्र पट्टिका से अभिनन्दन किया गया। राष्ट्रगान, शान्तिपाठ और जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शिविर में चालीस प्रशिक्षणार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण, ध्यान सत्र, आत्मरक्षा प्रशिक्षण, प्रेरक गीत, कहानी प्रस्तुति, पर्यावरण संरक्षण, मोबाईल फोन से दूर रहने, श्रीमद् भगवद् गीता संदेश, स्वास्थ्य वार्ता, आदर्श दैनिक दिनचर्या अपनाने आदि विषयों पर विशेष नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से नवीन पीढ़ी को संस्कारवान, ईश्वर भक्त, राष्ट्रभक्त बनाने हेतु विभिन्न कक्षाएँ आयोजित की गई।

- भूपेन्द्र शर्मा, संयोजक-बाल संस्कार शिविर

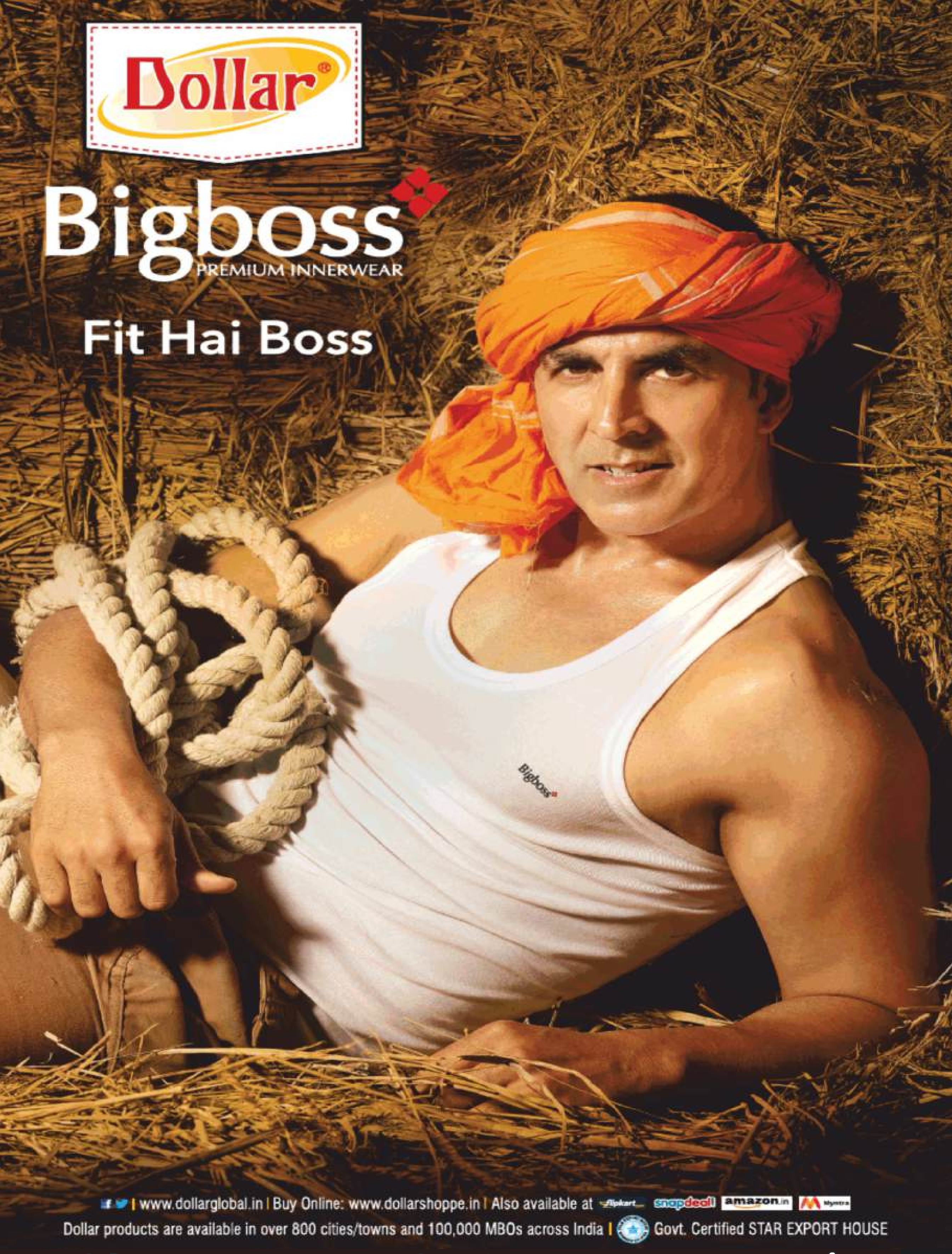
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at snapdeal amazon.in
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2026 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

सन्तानों को उत्तम, विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, माणिक, मोती, मूँगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण करने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं हो सकता, क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है।

- सत्यार्थ प्रकाश; तृतीय समुल्लास पृष्ठ ३७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर